हिवड़ै रा गीत मनडै रा मीत

शिव पाण्डे बीकानेरी
राजस्थानी साहित्य विसार

राजस्थानी भाषा साहित्य अर संस्कृति अकादमी बीकानेर रै
आंशिक आर्थिक सहयोग सूं छपी

संस्करण 1996
मोल अस्सी रुपिया
प्रकाशक राधादेवी पाण्डे, हनुमान हत्था, बीकानेर
मुद्रक रोशन प्रिण्टर्स, बीकानेर

HIVDAI RA GEET MANDAI RA MEET Rajasthani Lyr
By Shiv Pandey Bikaneri Hanuman Hattha, Bikaner

ओळखाण

आखै देस मे घूमनै जिग् कवि आपरै सुरीलै कंठा सू राजस्थानी (प्रवासी भी) समाज मे आपरी एक न्यारी निरवाळी ठौड बणा राखी है, उणरी ओळखाण करावण मे की तुक तो कोनी फेर भी रीत रै रायतै सारू दो सबद आपरै आगै है।

'हिवडै रा गीत मनडै रा मीत' श्री शिव पाण्डे द्वारा लोक-शैली मे लिख्योडो गीत-सग्रह है। लोक गीता मे ज्यू टेर अथवा स्थायी हरेक छन्द सागै पाछी गाईजै, उणी भात पाण्डे जी रै गीता मे भी बराबर आवृत्ति हुव।

लोक-शैली मे कृत्रिमता अथवा बणावटीपण रो नावलेस नई हुव। भाषा री सजावट कानी ध्यान देईजै कोनी। उणमे विचारपूवक उकेरयोडा चितराम नइ हुवै। बखत बखत माथै स्वाभाविक रूप सू नीसरयोडा हिवडै रा उद्गार ई लोक-शैली काव्य रो विषय बणै। पाण्डे जी रा अ गीत सप्रयास लिरयोडा कोनी। परिस्थितिया कवि र हाथ मे लेखणी थमाई अर इसी अमर ओळया मडाई जिकी जुगा-जुगा ताई समाज नै अनुप्राणित करती रसी, चावै वीरता रा गीत हुवा, आन-बान अर स्यान रा गीत हुवो, धण-धणी रा गीत हुवो, माईता टावरा रा गीत हुवो अथवा समाज या राष्ट्र री कोई ज्वलत समस्या हुवो।

राजस्थानी भाषा री सवैधानिक मानता र सवाल कवि रै माथै म उथळ-पुथळ मचा राखी है अर आपरै गीना रै माध्यम सू राजस्थानी न मानता दिरावण रो भार कवि आपरै साधा माथ ओढ रास्यो है।

श्री शिव पाण्डे राजस्थानी मच-कवि है, अर राजस्थान रा साळा मच-कवि जे शिव पाण्डे री लगन अर निष्ठा सू आगै बध तो आपा मानता रै सवाल नै सजा हल कर सका।

इण सावण सग्रह सारू शिव पाण्डे जी बधाई रा हकदार है।

केसर प्रकाशनालय
सोनगरी, चौक, बीकानेर

श्रीलाल म. जोशी

भूमिका

भारत भोम री सरधा-भगती सू अनेक वार परिक्रमा अर वन्दन करण आळा, आपर बुलन्द कठा अर हिरद र उदार भावा सू देस भगती रा, सामाजिक समरसता रा अर हत-प्रीत रै गीता सू जन गण मन म भावा री भतूळियो उठावण आळा मायड भाषा रा अथक उपासक भाई शिव पाडे, बीकानेरी री आ पोथी 'हिवड रा गीत मनड रा मीत'' पढ र घणो हरख हुयो। ई म की सन्देह कोनी क आ पोथी राजस्थानी भाषा रै गळहार रो एक चिलकणो नगीनो बणर सोभाय मान होवली।

इ पोथी रा मूळ सुर देस-भगती है। इणरै सागै-सागै कवि प्रकृति री कुसळ चितेरो है। भूरी वादळी-सोने रो सूरज, अर अलगू ज री लार सागै 'चादी जरणै धोरा माथ' अर बिरखा राणी आव ए आद गीता मे प्रकृति अर मानव मन री भरपूर महक आव।

कवि रा शृगार-सिणगार-बीकानर आचलिकता अर धोरा धरती री मिठास, सहजता अर सौम्यता सू परिपूरण है। 'गोरी कर बिलोवणो', 'पपयो बोरया सा', 'याद पियारी आवै, 'हिचकी', कागा', पिव रो गीत अर पणिहारी आतुर प्रतीक्षा अनै सयाग-वियोग सिणगार री घणमोली विरासत है।

दायजै री लू ठी समस्या न कवि 'परण्य री मागै पढाई ओ बावल म अर भाई-बहिन री प्रीत 'चिडकोली चाली सासरियै' अर 'धरम रो मायरा' गीत मे हेत री हद दिखाई देवै। कवि रै काव्य-शिल्प माथै हरख हुव।

सार रूप मे कै सका क श्री शिव पाडे बीकानेरी री आ पोथी राजस्थानी भाषा, साहित्य अर सस्कृति नै सहजण सारू अमोलक धराहर है। पुस्तकालया, विद्यालया, अर परिष्कृत रुचि रा सुधी पाठका न शिव पाडे बीकानेरी री आ भेट साची कवा तो एक अमरर वधावो है। घणमान ई लाडेसर कवि नै वधाई।

जानकीनारायण श्रीमाली

ब्रह्मपुरी चाक — पूव सचिव, राजस्थानी भाषा साहित्य
बीकानेर — एव सस्कृति अकादमी, बीकानेर

आत्मकथ्य अर समर्पण

पढाई–लिखाई रो मनै घणो अवसर मिल्यो कोनी, पण मा सरस्वती री प्रेरणा सूं म्हारै हिवड म कीं–न कीं लिखण सारू हुबोळा उठता जिका मन मत ई कलम पकडाई अर दो आखर माडणन मजबूर कर दियो। फेर भी हिवडै रै ˘ ता नै मनड रै मीता ज्यूं बोहळा बरसा ताइ म्है लुका-छिपायर राख्या। गुरुवा रा अर हेताळुवा रो आग्रह हो कै अै गीत अघार सूं उजास मे आवणा चाईजै।

मौखिक रूप सूं ता अै गीत घणी लाबी जात्रा कर चूक्या अर प्रवासी राजस्थानी भाई-बना रा विशेष आग्रह हो कै गीत छपणा चाईजै। सगळा रै सनेव-भरचै आग्रह रो सम्मान करता आनै छपावण रा विचार कर लियो अर आज अ पोथी रूप मे आपर हाथा म है।

आपसूं प्रोत्साहन मिलसी, इणी उम्मद सागै आ पोथी समर्पित है—

स्व पिताश्री लालूरामजी पाण्डे

अर

स्व मातुश्री दुर्गाबाई पाण्डे

री पावन स्मृति मे

घण कोड अर आदर–सन्मान सूं

शिव पाण्डे बीकानेरी
राजस्थानी साहित्य विसारद

मात-वदना

ज ज राजस्थान री मायड म्हे नित सीस निवावा हा,
जै जै जोधावा री जामण म्हे वलिहारी जावा हा।
ऊंची शान रयो है थारी,
सौ सौ सुरग जाय बलिहारी।
सोम भानु चरणा पर वारी,
कोटि कोटि है देव पुजारी ॥
सरधा रा पुसब चढावा हा म्हे नित सीस निवावा हा,
जै जै अमरसिंघ री जामण म्हे वलिहारी जावा हा।
थारो गरबीलो मा पाणी,
पी बीरा तरवारां ताणी।
किण ना थारी जात पिछाणी,
इतिहासा मे थव काणी ॥
माटी लिलाडा लगावा हा म्हे नित सीस निवावा हा,
ज जै जोधावा री जामण म्हे वलिहारी जावा हा।
अणगिणती रा करा प्रणाम,
दयो आसीस करा जू नाम।
थे ही अडसट तीरथ धाम,
छेकड मिलै था पर आराम ॥
अमर वधावो ही गावा हा म्हे नित सीस निवावा हा,
जै जै जोधावा री जामण म्हे वलिहारी जावा हा।
माथा भेंट करचा वो थारो,
राणा जडो बेटो प्यारो।
जुगा जुगा सू आ ही वारो,
हर हर महादेव रो नारो ॥
आजू ही आण निभावा हा म्हे नित सीस निवावा हा,
जै ज राजस्थान री जामण म्हे वलिहारी जावा हां।

हेमाळो

भारत र वच्च वच्चै नै ओ प्राणा सू प्यारो है,
भुक्यो न भुकसी हेमाळो ओ हिन्द देस रो नारो है।
लडणो जाणा मरणो जाणा,
अर जाणा हा मारणा।
दुसमण री छाती चढ जाणा,
पण नी जाणा हारणो ॥
म्ह राणा सिवाजी म्हारो खून घणो ही खारो है,
भुक्यो न भुकसी हमाळो ओ हिन्द देस रा नारो है।
इणनै लाधणिय री छाती,
म्ह गाडचा सू ताडदा।
फालादी हाथा सू स मिल,
वरा प्राण निचाडदा ॥
कासमीर सुवरण चिडकोली आ आत्मा रो तारो है
भुक्यो न भुकसी हमाळो ओ हिन्द देस रो नारो है।
इ जामण रै पाणी म ही,
वीराप री जाण है।
जलम सूरमा नै देवै नित,
आ वीरा री खाण है ॥
सीस देयकर मोल चुकाव आ मिनखा रा धारो है,
भुक्या न भुकसी हमाळा आ हिन्द देस रो नारो है।
अणगिणती री कुरबाण्या ही,
राखो इणरी लाज है।
हिन्द मुसलिम सिख ईसाई,
म र सिर रो ताज है ॥
आ भारत री ढाल इय म सब धरमा न म्हारो है,
भुक्यो न भुकसी हमाळा ओ हिन्द दस रो नारा है।

गीत

सूरमा धरती धोरा री

इण वर दे वीरा नै पुजवाया हँस हँस काम दस रै आया,
सूरवी जामण आ धोरा री राजस्थान री।
सूरमा धरती आ वीरा री राजस्थान री।।

आ धोग पर महाराणा री,
शान अजू तक खेलै।
तवा सरीसो ताव इयारो,
काई बिड़ना झेलै।।

कोसा लाबी चवडी छाती लहरा उपर लाख वळ खाती,
भारी आण अमरसिंघ खेल्यो बाजी जान री।
सूरमा धोरा री धरती आ राजस्थान री।।

गहरो पाणी मीठी वाणी,
पीया जात जतावै।
रण रै माही ऊभो जूझै,
क्दे हार भी खावै।।

कायर री कायरता भागै उठकर वो लडवा नै लागै,
जारी देस विदेसा वाता होवै मान री।
सूरमा धरती आ धोरा री राजस्थान री।।

लूवा तीखी आ टीवा री,
ज्यू रण चालै खाडा।
काचा घडा पका जगळ रा,
करै हिरणिया धाडा।।

सातरी बा रण भेरी गावै पछी वैठचा जीव लुकावै,
इतिहासा मे वान लिख्योडी शान री।
सूरमा धरती आ धोरा री राजस्थान री।।

जद सावणियो बरस जामण,
मद्री हाथ लगावै।
हरचै भरचै धोरा री साभा,
फर न वरणी जाव।।

जामण आ सूरा री खाण जलम दे अजू निभावै आण,
अणगिणती री ढिगल्या लागै धान री।
सूरमा धोरा री धरती आ राजस्थान री।।

देस बीकाणा

घन घन म्हारा देस बीकाणा घन घन म्हारा देस बीकाणा,
मीठा बोलर मन मोवै थारा मरद लुगाई स्याणा ।
आखातीज रा दुपडा फलका,
साग वड्या रो साग ।
अमलवाणियै माया मिसरी,
पीया इमरत लागै ।।
खीचड़लो जीमा ऊपर सू असली घी ऊधाणा,
मीठा बोलर मन मावै थारा मरद लुगाई स्याणा,
सूरां घरती गग नहर सू,
हरी भरी लहरावै ।
धारा विचम वस्या गाव सू,
निजर सुरग सा आवै ।।
उजळी उजळी रेत माय मोती सा निपजै दाणा,
मीठा बोलर मन मोव थारा मरद लुगाई स्याणा ।
जेठ महीनै तप तावडो,
सावण सुरगो नामी ।
सजडलै री छीया रास
रचावै अतरजामी ।।
ढाला काढ खळी गारडी ढिगला घान लगाणा
मीठा बोलर मन मोव थारा मरद लुगाई स्याणा ।
जैतसिंघ राती घाटी रो,
जीत्या हा जुघ लड्कै ।
तरवारा सू दुसमण रै
हाथा पर ताळा जड्कै ।।
नीव लगाई बीकोजी शिव पर केसरिया बाना,
मीठा बालर मन मोवै थारा मरद लुगाई स्याणा ।

धोरां पर राम रमै

आ धोरा री धरती इण पर राम रमै,
हर घर मिन्दर हर तीरथ भगवान रमै ।

ब मेवाड़ इयै री नगती,
घूंघट मे भळकावै ।
धरमराज री बेटी फूला,
फळती दूधा न्हावै ।।
ईं पर मीरा रै मागै घणस्याम रमै,
हर घर मिन्दर हर तीरथ भगवान रमै ।

तप नळ तवा सरीसो लूवा,
भळ पर रोटघा मेक ।
जलम सूरवा न देव नित,
आभो आख्या देखै ।।
माग म दवी देवा रो वरदान रमै,
हर घर मिन्दर हर तीरथ भगवान रम ।

आन्या देखी वात सुणावै,
इ रो हळदी घाटी ।
कटते माथा री जोभड़रया,
रेत इयैरी चाटी ।।
आरया देखी तरवारा री तान रम,
हर घर मिन्दर हर तीरथ भगवान रमै ।

जौहर मे कूदी राण्या रो,
अमर होयग्यो न्हावण ।

बण कुबेर मामासा हाथा,
नाग्या दरब लुटावण ।।
म्हाराणा री उगडयो पाछो जीव जमें,
हर घर मिन्दर हर तीरथ भगवान रमें ॥

बै बूढो चित्तौड फेरता,
मन मालक री माळा ।
कितो वार वैया में जाणू,
रण लाई रा थाळा ।।
म्हारें काना गोळा री घमसाण रमें,
हर घर मिन्दर हर तीरथ भगवान रमें ॥

उठी घटा दिल्ली सू बिजळी
दीवाणें पर कडकी
कट डोली मे बैठी सिंघणी
फेर उतरती भडकी
अकबर री छाती किरणा किरपाण रमें,
हर घर मिन्दर हर तीरथ भगवान रमें ॥

मैं नाव ओळखीजूं म्हारै

मैं नाव ओळखी जू सागण भाषा बा राजस्थानी हू,
मैं डीगळ माड देस सोरठ मरुधर री मीठी वाणी हू ।

जद जोग रमायो जोगण सो,
लिलवट लिखियोड़ी ना जाची ।
ससार सरायी बण मीरा,
जन जन मन आगणियै नाची ।।

आ भगती री ह करामात पी जैर जारणी जाणी हू,
मैं डीगळ माड देस सोरठ मरुधर री मीठी वाणी हू ।

तपत धोरा री माटी पर,
सावर ज्यू रोटया है सेकी ।
दुसमण न ल्हाग परो आडो,
कनचूणा थपडा री टकी ।।

फ्ठरी पदमणी पुगळ सी गू घट मे मरवण साणी हू,
मैं डीगळ माड देस सोरठ मरुधर री मीठी वाणी हू ।

वेमान रूप इमरो दूठयो,
ओळख वो या किरणा सागण ।
ईजत पर हाथ उठार लभ्या,
हळदी घाटी सी है नागण ।।

अकबर री छाती जठ परी अर काढ कटारी ताणी हू,
मैं डीगळ माड देस सोरठ मरुधर री मीठी वाणी हू ।

वीर्यं दिन सूं बूं क्ति वार,
लोई ऊ धरती न्हायी है ।
राणा भाल सू दिल्लो न,
पच्चीसूं बारू हिलायी है ।।

जौहर मे कूदी मेवाडण अमली हिंद हिंदवाणी हू,
मैं डीगळ माड देस सोरठ मरुधर री मोठी वाणी हू ।

पैरा मेवाडी मुक्ट तुरत,
झाल खांडै री धार वणी ।
नोसर म्यान सू वार अमरसिंघ,
घोडै चढ तरवार वणी ।।

पन्ना धायी सो रूप धार वेट री दी कुरबाणी हू,
मैं डीगळ माड देस सोरठ मरुधर री मीठी वाणी हू ।

महला री पैडया चढी मौत,
ल्हासा पर ल्हासा निछरी ही ।
तो राजकु वर न बाध पीठ,
रण घेरो टाडर निसरी ही ।।

झासी राणी वण हाथ माय सोसी तरवार उठाणी हू,
मैं डीगळ माड देस मोरठ मरधर री मीठी वाणी हू ।

मवाडी ताक्त नैं आधी,
घर र ही भेदी करवायी ।
धाडा री छाती छेद छेद,
तोपा गोळा सू भरवायी ।।

परणाय बहन वणग्यो साळो आ चावू वात वताणी हू,
मैं डीगळ माड दस सोरठ मरुधर री मीठी वाणी हू ।

घाट्या री मा हळदी घाटी,
चुसकारो तक ही करचो नही।
छाती मे छेद निमरग्या पण,
आख्या मे पाणी भरचो नही।।
वीरा रै ताते लोई सू पढलो लिखियोडी काणी हू,
मैं डीगळ माड देस सोरठ मरुधर री मीठी वाणी हू।

गढ चितौडो मू नी बोल,
बूढी आख्या सू जोवै है।
सतिया चितावा री लपटा,
आसू सू अजू बुझावै है।।
आय बरघा रो कई वार रण राख उतारची पाणी हू,
मैं डीगळ माड देस सोरठ मरुघर री मीठी वाणी हू।

रोजीनै सूरज सिखरा चढ,
चम्बल उपराकर बैवे है,
आभै रै आख्या देखयोडी,
मूढै सा काणी कैवे है।।
माभारत दायी वीरा री रण होता देखी हाणी हू,
मैं डीगळ माड देस सोरठ मरुघर री मीठी वाणी हू।

स भापावा नै ईजत दी,
चुप राखी अब नी रवू ली।
मा वार बोल मरकार सुणै,
हर हाथ पकड कर लेवू ली।।
सोनैनी मावट समझोना आ सपन म नी जाणी हू,
मैं डीगळ माड दस सोरठ मरुघर री मीठी वाणी हू।

वै दिन नैडा है दूर नहीं,
गुर गैरो हू गिलवावू ली ।
घाठ श्रोड बोटा सू घवकै,
दिल्ली नै हिलवावू ली ।।
रोया सू राज मिलै वानी तिरै श्रा मन म ठाणी हू,
मैं डीगळ माड दस सोरठ मरधर री मीठी वाणी हू ।

मानाव मान्यता रो चूनड,
म्हारा भाईडा श्रोडासी ।
सपनो साचा कर बै भडो,
मापावा साग फैरासी ।।
रे वपू नी छाती ठाक बऊ श्रावर तो मायड थाणी हू
मैं डीगळ माड दस सारठ मरधर री मीठी वाणी हू ।

इण धरती रा कण-कण पल पल
गारव री गाथा गाव है ।
देवा री टोळया सुण मुरगा,
पाण्ड शिव रोज सराव है ।।
पावा म जूती है म्हारै थे समझो किया उवाणी हू,
मैं डीगळ माड दस सोरठ मरधर री मीठी वाणी हू ।

मेहा आव रे

तन्नै हेलो देय बुलावा, खेता मे वाजरियो बावा,
मेहा आव रे, मेहा आव रे, खेत उवावरे, मेहा आव रे।

पाळ खडी पणिहारी कैव,
कुरणसी दिस न चढियो।
टाबर टोळी तिरगा मररया,
आकर भरदै घडियो ॥

थारै आया सुरगी तीज, धरती माही बोवा बीज, मेहा

ताळ तळाया सूकी पडगी,
पाणी रयो न छाट रे।
क्यू नी आकर वरसै वीरा,
काई करली आट रे ॥

आभै मे कुरजा कुरळाव, कोरा खोटा सुगन बतावै, मेहा

जगळ–मगळ दोनू सूका,
लागै रूप अदावणो।
बाट जोवता आख्या थकगी,
कीरै चढग्यो पावणो ॥

लूवा वहती लपका लेवै, त बिन प्राण जिनावर देव, मेहा

तपती तापै धरती आप,
धोरा उठरी भाळ रे।
तावडिये तो तपकर सगळा,
बूठा दीना बाळ रे ॥

गाया भूखा मरती जाव, पडग्यो काळ काई खावै, मेहा

मोर चौगना होयर वाले,
सारी राता जागै रे।
तिस मरता थाकल हिरणा री,
ख्वाल नाठना लाग रे ॥

आधी सागै उडरी रेत, सूना सरणावै स खेत,
मेहा आव रे मेहा आव रे, खेत बवाव रे मेहा आव रे।

धरती हेलाहेल करै

चढ धोरा तिलकारियो रे ऊभो तेजा गायरयो रे,
जाग थे साथीडा जावो ।
थान धरती हेलाहेल करै, थे दाडया ही भ्रावा,

कम्मर कस कर भ्राया लाया,
हळिया जेयी साथै ।
पाळी कळायण द द लोरा,
वरसै मेरा माथै ।।

टिचकारी द द बळधा न थे वाजरियो बावो,
धरती हेलाहेल करै ग्रब थे दौडया ही ग्रावो ।

सुण वाग्ळ री गरज मारिया,
मीठी बोली बोल ।
विजळी चमकै ज्याद बादळी,
गू घडडै न खोलै ।।

ऊटा कमकर पिलाण मीरा मेठतणी जस गावो,
धरती हेलाहेल करै ग्रब थे दौडया ही ग्रावो ।

ग्र ग्रलगू जा सूतोडी जद,
गारी रो मन मावला ।
भाभरक उठ भातै ताई,
भटक राटी पावैला ।।

भाग्या ग्रासी खेत म ढाला गज थे राटी खावा,
धरती हेलाहेल कर ग्रब थे रोटी ही खावो ।

सुण कित्या रा गीत सावण रा,
चादडलो सरमावै ।
कूवै खीचर वारो चौधरी
खडो कीलियो गाव ।।

बीकाणै री पिणिहारचा थे, भर पाणी ले जावा,
धरती हेलाहेल कर ग्रब थे दौडया ही ग्रावो ।

दूर अंधेरो भगाया

जोत सू जोत जगामो भाई दूर अंधेरो भगाया,
कांधे सू कांधो मिलाय कर थे आगै बढता जाया।
मोतीडल्या न्यौछावर कीया,
हो शहीदां री वाणी।
सुभाष पटेल री धरती रो,
मत लजाया थे पाणी।।
आजादी री नया सौप'र बावा, थे सेवता जाया,
कांध सू कांधो मिलाय कर थे आग बढता जाया।
हेमाळे री छिया माय नै,
रेवै है जात अनेक।
भेद भाव ना राखै सब री,
मायड भगा अक।।
नळै तिरगा ऊभर सगळा नारो अेक लगाया,
कांध सू कांधो मिलाय कर थे आग बढता जाया।
भारत र गौरव नै वीरा,
आंच कदै ना आवै।
रया चोकना कासमीर पर,
कोई न आंख उठावै।।
जे कोई आंख उठाव आज्या, फोड'र सबक सिखाया,
कांधै सू कांधो मिलाय कर थे आगै बढता जाया।
बापू सास्त्री जी रा सपना,
करसो स थेई साचा।
तूफा जे ललकार तो पग,
कदे न मेल्या पाछा।।
शिव भारत नै सुरग बणायर, गीत सुरीला गाया,
कांध सू कांधो मिलाय कर आगै बढता जाया।।

जवान भाई जाग रे

जाग रे जवान भाई जाग रे, ग्रालस न छोड काम लाग रे,
जाग रे किसान भाई जाग रे हिन्द रो वणाव क्यानी भाग रे।

नूवों सूरज ऊग्यो जनता,
खुशियां हीं मनायरी।
भारत रै मस्तक तिलक करके,
जैं माळा परायरी॥

सखियां ग्रारती उतार रई जाग रे, ग्रालस नै छोड काम लाग रे,
जाग रे किसान भाई जाग रे हिन्द रो वणावै क्यानी भाग रे।

पछीडा डाळ डाळ माथ,
मीठी बोली बोलर्या।
दरसण करवा देवता द्वार,
सुरगा रा ही खोलरया॥

अव गगा म इमरत ग्रथाग रे, ग्रालस न छोड काम लाग र,
जाग रे किसान भाई जाग रे हिन्द रो वणाव क्योंनी भाग रे।

रगत पसीनो सीच जदे तू,
धान धरा निपजासी।
ग्रेक ग्ररव जनता सारू वो,
जीमण ग्राडो ग्रासी॥

वगत नूवा परवानो पढ जाग रे, ग्रालस न छोड काम लाग रे,
जाग रे किसान भाई जाग रे, हिन्द रो वणावै क्योंनी भाग रे।

राज हैं थारो काज थारो,
हाथा मे हळ साभल।
उठ देस रो तू निरमाण कर,
हीमत सू ग्रव काम ले॥

पाण्डे शिव लिख नूवा इतिहास रे, ग्रालस नै छोड काम लाग रे,
जाग र किसान भाई जाग रे, हिन्द रो वणावै क्योंनी भाग रे।

म्हारोड़ी आंख्यां रो तारो

लाग ग्रो प्राण सू प्यारो म्हाराडी श्रांख्या रो तारो
सोन री चिडिया कैवाव भारत म्हारो है

मरजादा रै मारग चालर
चादर सूरज ऊगै
ग्रधर ग्रधर ग्राभै पग धरता
धरे ग्राप रै पूमै
ग्रारै दरसण स्यू सुख होवै भारत म्हारो है
सोनै री चिडिया कवावै भारत म्हारो है

रुत वासन्ती जद मारभ सू
वन मनडो महकावै
छिटक फूल वण जाव कळिया
भवरा न रस पावै
ग्राभो इमरत वरसाव भारत म्हारो है
सोनै री चिडिया कवावै भारत म्हारो है

चादी सिरसा रूप निखरता
चादणी री लागै
पछीडा री मीठी बोली
सुण रातडली जाग
सोभा नहीं सरायी जावै भारत म्हारो है
सोनै री चिडिया कैवावै भारत म्हारो है

हवा वैवती रूप निरखती
झट थुथकारा हाखै
मोभी देटो जाणर कुदरत
छत्तर छीया राख
जगत रा लोग देखण, ग्राव भारत म्हारो है
सोनै री चिडिया कैवावै भारत म्हारो है

धरम रो मायरो

चानणिया मे चमक चीर चीर आछसो धरम रा वीर,
चदा रे सनमा त्याद म्हारी माय रो।

रस्त वहतो एक जिणजारो गाव विणजवा आया
जाणू नही परायो जायो वे-वेलद घर लाया
बिसराम करे पीपळ रे तळ वरी छीया गहर गभीर
चदा रे सनेसो ल्याद म्हारी माय रो

तिस लागी जिणजारो पळसे पाणो पीवण आयो
सास हुकम सू भर लोटो मैं ठडा पाणी पायो
वीरे री याद कांइ करी वात आस्या सू बैग्यो नीर
चदा रे सनसो ल्याद म्हारी माय रो

जिणजारा सब विणज भूलग्यो राटी भूल्यो खाणो
गु घटो उघाडर दुखडा सुणावो नयी मनड री जाणो
भाई बण थारा दुखडा सुणसू कैवा ता पावारदू पीर
चदा रे सनेसो ल्याद म्हारी मायरा

हस हस काम करू म्हारा बीरा दुख सहता सुख आई
सगळो ही भगवान दियो नी मारा जायो भाई
मायरिय री मन म म्हार कुण ओढाव चीर
चदा रे सनेसो ल्याद म्हारी माय रा

सुरज साखी हू धरम रो भाई फिकर करो मत बाई
मायरिय मे के के चाइजे जल्दी देवा लिखाई
आगणिये चढ भरू मायरो मनड मे आसी जद धीर
चदा रे सनेसो ल्यादे म्हारी माय रो

थे मती वहाणो नीर ओढलो चीर भाई सिर हाथ धरे
विणजारा भाणू रे व्याव मे मामा बण मायरा भरे
शिव पाण्डे धन कदियन घटियो बढग्या नदिया नीर
चदा र सनेसा ल्यादे म्हारी माय रो।

आवो नमन करा

भारत गौरवसाळी, मस्तक आवो तिलक करा,
भारत मा र चरणा माही आवो नमन करा।
मंत्र उचारण करै देवता,
किरणा माळा लावै।
आभो संख बजाय दिसावा,
गीत हरख रा गावै।।
पवन फूल बरसाय आगणो महकै ध्यान धरा,
भारत मा र चरणा माही आवो नमन करा।
कुदरत दै आसीसा सूरज,
नुवी भोर नित लावै।
मनमोहन मुरळी धर होठा,
मायड भाग भरावै।।
बापू रा सपना पूरा कर नव निरमाण करा,
भारत गौरवसाळी मस्तक आवो नमन करा।
सागर लहरातो सगळा री,
झोळ्या भररयो मोती।
हेमाळै रै तळै जग अेक,
सगनी सालो जोती।।
आजतलक ना बुझी न बुझसी सगती सास भरा,
भारत गौरवसाळी, मस्तक आवो तिलक करा।
म्हे भारत री अेक अमानत,
काम देस र आसा।
नाव कमाय'र इतिहासा म,
जनम दूसरो पासा।।
मरणै नै मगळ समझा मरदा री मौत मरा,
भारत गौरवसाळी मस्तक आवो तिलक करा।

राष्ट्र गीत

म्हं भारत री अेक अमानत म्हान है वरदान,
नव सिर इतिहास लिखाला वणसी देस महान।
हर टावर गुणवान वणला
गुणवती सब बाया
भगतसिंघ झामी राणी सी
देस भावना आया
जगत पड्या हेमाळै पर न्योछावर करसा जान
नवै सिर इतिहास लिखाला वणसी देस महान
देवा सा गुण है सगळा मन
चदण सा महकासी
शिक्षा दीक्षा री गावा अर
घर घर अलख जगासी
भाग वणावण माटी माया म्हं फूकाला प्राण
नवै सिर इतिहास लिखाला वणसी देस महान
मरजादा री पकड आगळी
छत्तर छीया बसा
धरमराज वण मुकट पैरकर
मिलकर नइया खेसा
दसू दिसा मारग दरसासी तूफा रै वरदान
नव सिरै इतिहास लिखाला वणसी देस महान
म्हारै नारा सू गूजलो
आभो धरती तारा
समदर लहरा चादर सूरज
गगा जमना धारा
मिन्दर मसजिद गुरद्वारा अर गिरजाघर री मान
नवै सिर इतिहास लिखाला वणसी देस महान

मायड री ममता

देख्यो न राम रहीम क्यी,
ग्रा कूडी ग्रात लिखू कोनी।
जोव रामजी नै देणो है,
मरणो मजूर विकू कोनी।।

माड्योडी मायड भाषा मे,
मायड री महिमा पढ लेवो।
जमराज न रोक सकै पढकर,
मुगती री पैडया चढ लेवो।।

गुरु ब्रम्मा विषणू शिवजी सू,
मा री ग्रासीसा सस्ती है।
पडत मुल्ला ग्रा बता सकै,
इणसू ऊची भी हस्ती है।।

नित उठकर इणरो नाम जपू,
ग्रा धरमराज तक कैवै है।
ग्रणजाण वण परा बेटा क्यू,
काना मे कोवा लेवै है।।

सूधी गरीबणी गाय जिसी,
कडवी भी बोली बोल सको।
गागर मे सागर कोख जिकी
हीरा सू कोनी तोल सको।।

इण रै चरणा रै तळ सुरग,
पूजणियो रूप पिछाणै है।
सा बात जाणता थका लोग,
क्यू राख जगत री छाणै है।।

दुख भेल आसू ढळकाती,
हिवडो दुखडा रो सागर है।
मू तीन तिलोकी देखायर,
गोदी खेल्यो नटनागर है।।

सगळी सृष्टी री आ स्रष्टा,
गुण पूजण लायक नी भाडू।
वेटा पढ मान करा थारो,
स बाता पोथी मे माडू।।

वी आगण माही रम राम,
मारी ईजत घर मिन्दर है।
सायर सरवण सो है बेटो,
उणरा दिनमान सिकन्दर है।।

अब असली बात बता थार,
काना रा भाडू हू कीडा।
नवमहिना राख पेट माया,
इण कितरी सहन करी पीडा।।

दुनिया देखायी जलम देर,
जस किया भुलावो हा मा रा।
मूढ सू कडवा वोल पग,
पापा रो बाधो मत भारा।।

इण री आसीसा फळदायी,
लेवण देवा रो मन डोलै ।
खाली हरगिज नीं जाय सक,
मुगती रा दरवाजा खोलै ॥

गीलै रै माया सोय परी,
सूकै र माय सुवाणै है ।
मूढै रा कोवा दे पाळै,
आ बात कुण नही जाणै है ॥

जद इण रै दुख री सीमावा,
तू ध्यान लगायर नापी है ।
वज्जर सी छाती बेटा सू,
नीं लाड लडाती धापी है ॥

थे-देइ देवता मन ध्यावो,
आ भव तिरण री जुगती है ।
मा री सेवा असली सेवा,
करणै सू होवै मुगती है ॥

सा आख्या देखी लिखू बात,
नी करू बडायी हू थोथी ।
माटा नइ बोल सरावण नै,
मा ही मणा री है जोती ॥

ऊर देवा औ अनमोल बोल,
इतिहासां र माया ऊगै ।
चदण सी वपकर बे सोरम,
नहरानी घर घर मे पूगै ॥

गीता सू भाग भरू सुर में,
लिख अमर वधावो गाऊ हू।
पाण्डे शिव कोटि नमन सागै
चरणा बलिहारी जाऊ हू ।।

जद फरज ऊतरै वणापरो,
परावू जूत्या इण तन री।
मनडै री मन मे रैय गयी,
मा रळी नीसरी है मन री ।।

□

विदाई गीत

चुग्ती ग्रागण पख पसार रमी दिन च्यार सुवटिये रै लार,
चिड़कोली चाली सासरियै, बाई चाली सासरियै ।

बावल दी गठजोड गाठ लाखा मे वर रूडो छाट,
तारा री छया ऊभ परा ।
हसती पायल री झणकार मज्योडी सिणगार गवरल उणिहार,
बाईजी चाल्या सासरियै ।।

मा मन दीनो हेत हलोळ नणा मे ग्राई भल छोळ,
समदर दायी उमड पड्यो ।
सूनो ग्रागण देहळी करती ग्रधर पग धरती पावडा भरती,
बाईजी चाल्या सासरिय ।।

वीर सिरपर फेरचा हाथ कै ढळतोडी रात,
ग्रासूडा सू देव सीखडली ।
भोळी हिरणी सा नण उदास छोड रही वास सूरज रै उजास,
बाईजी चाल्या सासरियै ।।

भावज सीख दी धीरज बधाय लारै परिवार,
सहेल्या गावै कोयलडी ।
पाछी मुड मुड देखनी जाय ग्रोज्य् शिव गाय रसड़ा बरसाय,
बाईजी चाल्या सासरियै ।।

दुनिया रीझैली

मालक रीझ्या सब कोई रीझँ मा रीझ्या सू मायला पतीजँ
दुनिया रीझैली मीठैं बोल्या सू, भरम गाठ रो जाय दर दर डोल्या सू

आदर आप गुणा मे मोटो,
तुरत फुरत दव लेखो।
दुसमण झुकँ बिय र आगै,
नही किया तो कर दखो॥
विस इमरत वणजावै मीठैं बोल्या सू, भरम गाठ रो जाय दर दर डोल्या सू

मित्र किया तो रहा मित्र सग,
मित्राई रा फळ चाखो।
भली बुरी सा बात मित्र रो,
हिडदै माही नित राखो॥
दुनिया हासेली पडदो खोल्या सू, भरम गाठ रो जाय दर दर डोल्या सू

पर हाथा म पइसा देयर,
आघी चीज मगावै।
ववण आळा साची क खुद,
मरघा सरग मे जावै॥
मनरा विसवा खोवै वैनै तोल्या सू, गाठ रो जाय दर दर डोल्या सू

भरम भरम मे दुनिया खोयी,
भरम भेद ना पावै।
हरि चरणो मे होय लीन शिव,
पाण्डे महिमा गावै॥
नर थारा कल्याण साची बोल्या सू, भरम गाठ रो जाय दर दर डोल्या सू

मैंदी राचोड़ा हात

गोरी रो मनडो दुख पावै किण सूं करे दो वात,
साईणं री याद दिरावै मैंदी राचोडा हाथ ।

उमग उठै मनडो आ कैवै,
कद वै पाछा वावडै ।
प्रीत हरोळा लै समदर ज्यूं,
हिवडै मे नी नावडै ।।

भूलूं तो भूली नी जावै फेरा आळी रात,
साईण री याद दिरावै मैंदी राचोडा हाथ ।

तारा साम्ही जोय मुळकरचा,
फिरत्या माग भरायरी ।
होठा माथ वात अधूरी,
सैना म समझायरी ।।

हिवडै माया प्रेम उमडकर मगळी बतावै वात,
साईण री याद दिरावै मैंदी राचोडा हाथ ।

अेक डाळरा म्हे दो पछी,
वै सावरा मैं सावरी ।
याद सरीसो ढोला म्हारो,
पूजारण वा नावरी ।।

वरस हजारा दो मालक रै गठजोडै री जात,
साईणं री याद दिरावै मैंदी राचोडा हाथ ।

दिन ऊग्या नगादन आ वोली
वीरो तडक आवसी ।
म्हन सपना गवरन टूठया,
गालो कदी ना जावसी ।।

माईणो आव मन विसमाव, उमटी मुहागो रात,
परण्योड री याद दिराव मैंदो रानोड़ा हाथ ।

बायरिया

ठडो चालै रै बायरिया म्हारै धारा रा सायरिया,
थारा कितरा कडू वखाण करचा नी जाव रे।
ठडी ठडी लहरा नीद घणे री आवै रे,

खेजडलै री छीया माही,
घुमर धानै मारिया।
झूपडल रै माय चौवरी,
बैठो बटै डारिया॥

तू सूतोडी गोरी न वयू फेरर हाथ जगावै रे,
ठडी ठडी लहरा नीद घण री श्राव रे।

सावणियो वरसै समोलिया,
देवा रा ई मन मोवै।
पछीडा री सुणकर बोली,
प्रसन आत्मा होवै॥

हरियै भरियै धोरा सू मा धरती सोभा पाव रे,
ठडी ठडी लहरा नीद घणे री श्रावे रे।

तीनरिया रै जगळ माया,
पाणी पडयो बेथाग।
पगडडया पर मस्त हुयोडा,
काळा लोट रया नाग॥

फूकारा फण सार मार नागण सू हत जताव र,
ठडी ठडी लहरा नीद घण री श्राव रे।

राधा गोरी पूछ थारो
किसै नगर रो ग्णा है।
पाण्डे शिव कै बीकानेरी
श्रा नगरै रो सणा है॥

ओ वायरियो नगरा नगरा ठडा ठडा छाव र,
ठडी ठडी लहरा नीद घणे री श्राव र।

पणिहारी

बोल मोरिया मरुधर रा हू गरजा कर कर हारी,
आसी कद सदेस पीव रो पूछ रही पणिहारी ।

आधी रात पहर रो तडको,
हू पाणी नै आऊ ।
पापी जीव क्यो ना मानै,
कूकर चिलम लगाऊ ।।

पडी सेज मे कापू सुण सुण मीठी बोली थारी,
आसी कद सदेस पीव रो पूछ रही पणिहारी ।

जुलमी मीठो मती बोल रे,
उपजै मन मे खीज ।
साईण बिन सूनी लागै,
सावणियै री तीज ।।

चाद सरीस ढोलजी री हू बिलखा-री नारी,
आसी कद सदेस पिव रा पूछ रही पणिहारी ।

फर फर आख फरुकै डावी,
तू मारगियो देख ।
जाता करता साजन म्हासू,
करग्या कवल अनेक ।।

कागद लिख लिख मनै रिझाव पढ म्हाखू निसकारी,
आसी कद मदेस पीव रो पूछ रही पणिहारी ।

आज रात छोटी नणदल नै,
कैयी मन री बात ।
सपन थारै बीरै पकड्यो,
आकर म्हारा हाथ ।।

नख चख गहणा पैर सजी सोवण न सेज सवारी,
आसी कद सदेस पीव रो पूछ रही पणिहारी ।

सीखडली गीत

बाबल गठजाई जाडी आ रमी आगरिये थोडी,
बाई मुड–मुड पाछी जोय मायड री ओळू आय रई ।

साथणिया सग रमी च्यार दिन,
गवरल रा गा गीत ।
परदेसी पछी आ इण रा,
मनडो लीनो जीत ।।

ब सासरियै रा घोरा बढनी न लाग दोरा,
बाई मुड–मुड पाछी जाय बाबल री ओळू आय रई ।

मिरगा नैणी आख्या माई,
काजळियै री रेख ।
पलका पर आसूडा मन म,
उठरचा भाव अनेक ।।

मा अधर अधर पग धरती गू घट म डुसका भरती,
बाई मुड–मुड पाछी जाय वीरै री ओळू आय रई ।

राधा स्याम सरीसी जोडी,
मत ना पूछो बात ।
चान्णी थुथकारो न्हाखै,
ढळती माझल रात ।।

हाथा मे चुडलो खणक गीर मुखड टीकी दमक,
बाई मुड–मुड पाछी जोय भावज री ओळू आय रई ।

पाण्डे शिव कै छोड कायलडी,
साथणिया रो डार ।
साईण सग अक बसासी,
रँगरूडा ससार ।।

अ बणग्या जीवण साथी तो अेक तेल एक बाती,
बाई मुट–मुड पाछी जोय सहेल्या री आळू आय रई ।

आभै छायी बादळी

वादळी आ बादळी आई काळी पीळी बादळी
धनस भात रो ओढ ओढणो आभै छायी बादळी

फेरा दे रितुराजा राणी
सावण नै परणायी
अधर अधर पग आभै धरती
गठजोडै सू आयी

सात समदा म सू इमरत भरकर लायी बादळी
धनस भात रो ओढ ओढणो आभै छायी बादळी

सैचनण कर धरती बिजळी
चमक भूरोड भुरजा
आभइयो धररावै उडती
सुगन बताव है कुरजा

धरती न कर हरी भरी मोती निपजासी बादळी
धनस भात रो ओढ ओढणो आभै छायी बादळी

कोटै बरसी बूंदी बरसी
उदियापुर अजमेर
जैपुर बरस जोधपुर लुळलुळ
बरसी बीकानेर

नव खूटा रा ताळ तळाया भरसी भूरी बादळी
धनस भात रो ओढ ओढणो आभ छायी बादळी

खेता पाकी बाजरी तिल
पाक्या मोठ गवार
बिरखा होयी करमा रै मन
होयो हरख अपार

गाव गाव सोनलियो सूरज न ऊगाया बादळी
धनस भात रो ओढ ओढणो आभ छायी बादळी

याद पीव री आवै

झिरमिर झिरमिर मेवलो बरस याद पीव री आवैं,
अब म्हारो मन बस मे कोनी कुण इण नै समझावै ।

सावण छायर कर गिलगिली,
हूक उठै तन माया ।
रू रू म्हारो खिल्यो फूल ज्यूं,
उठ उठ ल्यूं अगडाया ।।

आज जवानी बिन पाणी रै मछली ज्यू तडफावै,
अब म्हारो मन बसमे कोनी कुण इण नै समझावै ।

कामणगारी वायरियो कर,
बतळावण चचेड ।
क्यो न मान गोरे अग पर,
हाथ फेर कर छेडै ।।

सेंज माय नागण सी लोटू पूगी रात वजावै,
अब म्हारो मन बसमे कोनी कुण इण नै समझावै ।

बादळिया र गाव चानणी,
नाचै नखरा करती ।
आभै सूं सरमायर गूघट,
काढया ऊभी धरती ।।

बिजळी सिखरा पळक पळक के रूपडलो निरखावैं,
अब म्हारो मन बस मे कोनी कुण इण नै समझाव ।

माथणिया मिल कर मसखरी,
कैऊ क्यो न मान ।
म्हा पर बीती म्हे ही जाणा,
सो लिख भेजू थांन ।

नीब निंबोळी पाकी आभो इमरत रस बरसावै,
अब म्हारो मन बस म कोनी कुण इण नै समझावैं ।

कुरजा बोलती जावै

वोलती जावै जी कुरजा बोलती जावै,
मीठो मीठो मिसरी सो रस घोळती जावै ।

आभै ठडी रात दिसावा,
धरती गूंजण लागी ।
ढोलो रै परदेस चाणचक,
सुणकर गोरी जागी ।।
सन्देसो देवण नै गूंघट खोलती जावै,
बोलती जावै जी कुरजा बोलती जावै ।

पूनम रो चादडलो ऊग्यो,
लेय चानणी सागै ।
साईण री सूरत रै-रै,
आवै नैणा आगै ।।
वैरण पुरवा छेडर अग पपोळती जावै,
वोलती जावै जी कुरजा बोलती जावै ।

सावण आछो लागै कोनी,
बादळिया री छीया ।
मैं मनडै नै देय दिलासो,
राखू कद तक ईया ।।
नैणा सू निसकारा भर भर ढोळती जावै
बोलती जावै जी कुरजा बोलती जाव ।

सेज माय वा सूती सोच,
गवरल रा दिन च्यार ।
दिसावा सू आया अक्चक,
जाडी रा भरतार ।।
प्रेम समदर मे डग मग वा डालती जावै,
वोलती जाव जी कुरजा बोलती जाव ।

बडभागण भारत री नारी

कुदरत उत्तर छीया कर क तू बडभाग भारती
थारा साईणा राम रूप सा रोज उतारचं आरती

पूजी गवरल जद ईसरजी
आप जिसो भरतार दियो
सातू सुख झोळी मे घाल्या
सपन मे श्रो आर कियो

राघा बणकर स्याम नाव सू रैये माग सवारती
थारा साईणा राम रूप सा रोज उतारच आरती

सूरज समझ अरग नित दीजे
टोकी तप चढतो जासी
अनसूइया सी जाण देवना
घोक लगा मायड वसी

चाद समझ तू पूनम बणकर रैये रूप निहारतो
थारा साईणा राम रूप सा रोज उतारचं आरती

कदइ ममता लाड लडाती
बेटा सू घाप कोनी
कुण हिंदू कुण मुसळमान सिख
भेद भावं राख कोनी

धरती बणकर अन निपजायर कोवा दे रयं पाळती
थारा साईणा राम रूप सा राज उतारचं आरती

थुथकारो ल्हाखू लिछमी सी
अमर सुहागण कूख न
सोनै री चिडिया थारोड
निजर नी लाग रूप नै

निछरावळ कर पती देव पर मुखडा रये उछाळती
थारा साईणा राम रूप सा रोज उतरचं आरती

कागो

म्हारा आलीजा वसै परदेस, आवै तो कागा सुगन बताय दे,
म्हारी नीद उडै रे आधी रात आवै तो स्याणा सुगन बताय दे।

मैडी चढ मारग देखू बैठ झरोखै,
चढती उतरती नै सासू जी टोकै।
मनड न किया ममझाऊ रे, आवै तो कागा सुगन बताय दे,
म्हारा आलीजा वसै परदेस आवै तो कागा सुगन बताय दे।

पाणीडै नै जाऊ तो पूछै पणिहारी,
अेकलडी सूत्या किया कटै रात थारी।
गू घट मे सुण सरमाऊ रे, आवै तो स्याणा सुगन बताय दे,
म्हारी नीद उडै आधी रात आवै तो कागा सुगन बताय दे।

सावण आवण कैयग्या अोजू नी आया,
देख जार थानै कुणसी सोक्ण बिलमाया।
म्हार मनड म उठरचा गोट रे, आवै तो स्याणा सुगन बताय दे,
म्हारी नीद उडै रे आधी रात, आवै तो कागा सुगन बताय दे।

लागै रे अडोळा मनै इसो जीवणो,
दणसू ता आछो वीरा बिम पीवणो।
आ रात कैवै उमर अठारा रे, आवै ता कागा सुगन बताय दे,
म्हारी नीद उड रे आधी रात, आवै तो स्याणा सुगन बताय दे।

किण सज मज सिणगार मैं बताऊ,
जी चावै पखी बण मिलकर पाछी आऊ।
तनै मातीडा री चूण चुगाऊ र, आवै ता स्याणा सुगन बताय द,
म्हारी नीद उड र आधी रात, आवै ता कागा सुगन बताय दे।

बोल रे मोरिया

पिउ-पिउ-पिउ-पिउ बोल रे मोरिया
पिउ पिउ में पिवजी रो नाव म्हारै मन भावै रे ।

पिउ म्हार दुख सुख रा साथी,
जलम मरण रा ग्रेक सगाथी ।
मांग म भरया सिन्दूर भुलाया नही जावै रे,
पिउ पिउ म पिवजी रा नाव म्हार मन भावै र ।

ग्र सावण री सुरंगो राता,
किणनै यू मनडै री बाता ।
परवायी चाल ठंडी पून नीद नी ग्राव रे,
पिउ पिउ म पिरजी रा नाव म्हारै मन भाव रे ।।

पिउ पिउ मांयी प्रेम भरया है,
पिउ मनट पर जादू करया है ।
मुडनै लिम्योडो नाव मैं वाव मराऊ रे,
पिउ पिउ म पिवजी रा नाव म्हार मन भावै रे ।।

पिउ सुण नार बावळी हावू,
डागळियै चढ मारग जोवू ।
खीर जीमाऊ पिव ग्रावण सनसा काई लाव रे,
पिउ पिउ म पिवजी रा नाव म्हार मन भावै रे ।।

पिउ दरसण बिन ग्राख्या तरसै,
दरसण हाया मनडो हरस ।
हिवडै म बारी नित बोली हूक उठावै रे,
पिउ पिउ म पिवजी रो नाव म्हारै मन भावै रे ।।

गोरी करै बिलोवणो

झाझरकै उठ कर व आटो पीसर रोटी पोवणो,
माय भू पडै बठी गोरी झडमड करै विलोवणो।
जिया चानणी आप ऊतरी,
चादडलै र सागै।
गोरै गाल पर छोटो सो तिल,
घ्रू नारो सो लागै॥
यू घट मे सू नए उठायर गजब सामनै जोवणो,
माय भू पडै वैठी गोरी झडमड करै बिलोवणा।
दाडम जैडा दात चमकरया,
अर सुवै सिरसी नाक।
शिव युथकारो न्हाखर निरखै,
लाग नी जावै चाख॥
ले अगडायी गजब वीएरा अजब सेज मे सोवणो,
माय भू पड वैठी गोरी झडमड करै विलोवणो।
रुप रुपोळो पतळी कम्मर,
क्सा काचळी तणकै।
चाडै माय सू माखण काढै,
खण खण चूडो खणकै॥
गजवण री गारै हाथा सू गजब गारवद पावणो,
माय भू पडै वैठी गोरी झडमड करै विलोवणा।
ईसरजी रै गवरल जैडी,
जिया मोर री मोरणी।
सावण री सी भूरी बादळी,
तीजा री गणगोरणी॥
अग निरखती गजवण री यू गजब ही ऊभो हावणो,
माय भू पडै वैठी गोरी झडमड कर विलावणो।

अळगूजा

चादी वरणै घारा माथै उजळ उजळै टीबा माथै,
श्रै ता गरण गरण गरणागै मीठा श्रळगू जा हा हा ।
मीठा श्रळगू जा हा हो मीठा श्रळगू जा हा हा,
रात चादणी गू घट काटया,
हाथा मदी राचरी ।
चादडला घुंघरारा ल्हास,
पावा पायल बाजरी ।।
तारा चग बजावै गावै मीठा श्रळगू जा हा हा
मीठा श्रळगू जा हा हो मीठा श्रळगू जा हो हा ।
श्राभो भूम मद चढियोडा,
पून बावळी हायरी ।
रुत लुळ लुळ कर रस बरसाव
मिनखा रा मन मोयरी ।।
कर कर मार किलोळा नाचै मीठा श्रळगू जा हा हा,
मीठा श्रळगू जा हो हो मीठा श्रळगू जा हा हा ।
सुणलै गारी उमग उठ मन,
रात दाय नी श्राय री ।
कद साईणा श्राव ऊभी,
दवी देव मनाय री ।।
बीर हिवड तीर चलावै मीठा श्रळगू जा हा हा,
मीठा श्रळगू जा हो हो मीठा श्रळगू जा हो हो ।
जी चाव पछी बण उडलू,
धर परदेसा जाय लू ।
साईण सू मन री वाता
कर के पाछी श्राय लू ।।
मनगै माया गाट उठाव मीठा श्रळगू जा,
श्रै तो गरण गरण गरणाव मीठा श्रळगू जा ।

गोरी करै बिलोवणो

भाभरकै उठ कर वै आटो पीसर रोटी पोवणो,
माय झूपडै बैठी गोरी झडमड करै बिलोवणो ।
जिया चानणी आप ऊतरी,
चादडलै रै सागै ।
गोरै गाल पर छोटो सो तिल,
घ्रू नारो सो लागै ।।
घू घट में सू नण उठायर गजब सामनै जोवणो,
माय झूपडै बैठी गोरी झडमड करै बिलोवणो ।
दाडम जैटा दात चमकरया,
अर सुवै सिरसी नाक ।
शिव थुथकारी न्हाखर निरख,
लाग नी जाय चाख ।।
रो अगडायी गजब बीएरा अजब सेज म सावणो,
माय झूपड बैठी गोरी झडमड करै बिलोवणो ।
रूप स्पोळो पतळी कम्मर,
कसा कमचळी तणकै ।
चाडै माय सू माखण काढै,
खण खण चूडो खणकै ।।
गजवण रो गारै हाथा सू गजब गारवद पोवणो,
माय झूपडै बैठी गोरा झडमड करै बिलोवणो ।
ईसरजी रै गवरन जैडी,
जिया मोर री मोरणी ।
सावण री सी भूरी बादळी,
तीजा री गणगारणी ।।
अग निरखनी गजगण रो वू गजब ही ऊभो हावणो,
माय झूपडै बैठी गारो झडमड वर बिलोवणो ।

हंसा

हंसा मन मानी मत कर रे,
अब तो सत्य नाम चित धर रे।

देखाएँ तू मीठो बोल,
मन री गांठ कदे ना खोलै।
इमरत माहीं जैर घोळ कर,
तू हरया हरया मत चर रे।।
हंसा, मन मानी मत कर रे।

मती लगा माया री कामी,
मिनख जमारो अळो जासी।
लूखी सूखी में आणद है,
तू कर के तो देख सबर रे।।
हंसा, मन मानी मत कर रे।

अदबुद हंसा माया थारी,
किण सूं ही ना रास यारी।
मग तपस्या कर संता री,
पल में कर देवै वे पर रे।।
हंसा, मन मानी मत कर रे।

सब पापा री ग्रेक दवाई,
पाण्डे शिव लिख भरै गवाई।
नासवान संसार भरम है,
प्यारा तू है अजर अमर रे।।
हंसा, मन मानी मत कर रे।

रुत राणी रो गीत

जए जए रै मनडै नै मावै मुळक परी रुत राणी,
घूमर घालती, अधर पावडा भरती आभै चालती ।
झाडूडा ओढणं मडोडा,
चमकै तार किनार ।
बाजूबद मे लूवा लटकै,
गळै नवलखो हार ।।
नखराळी रो रूप रुपाळा पदमण जेडी लागै धोरा चालती,
घूमर घालती अधर पावडा भरती आभ चालती ।
जसळमेरी अमी कळया रो,
घाघरिय रो घेर ।
फिरत्या सागै वठ गवररा,
रैइ गीत उगेर ।।
अमर सुहागण आ वडभागण, मरवण जडी लाग फुलडा टाळती,
घूमर घालती अधर पावडा भरती आभै चालती ।
बादळिया बिजळी रै सागै,
आया दिसावा लाघ ।
इदरधास रंग स बू बू सू,
है भरियोडी माग ।।
गायर मेघ मलार रिभावै अलगू जा सुर पर राग सारती,
घूमर घालती अधर पावडा भरती आभै चालती ।
आ कुदरत री बेटी रुत यू,
राजा नै परणायी ।
होना रै दमकार दना,
चोवाणे पर छायी ।।
पाण्डे शिव रै जगत-जगत आ प्रीत गजब री पाळणी,
घूमर घालती अधर पावडा भरती आभै चालती ।

लाखां रो सिरदार परणायै

म्हनै गाजी मूछ्यां आळो वर परणाजे म्हारी माय,
जिण रो वस सूरवा होवै वी घर दीजे म्हारी माय।
मेवाडी धरती रो राणो,
मायड पूत सपूत।
म्हार सिर रो सेवरो हो,
खरो वीर रजपूत॥
मायड रा नी दूध लजाव वी घर दीजे म्हारी माय,
जिण रा वस सूरवा होव वर परणाजे म्हारो माय।
रण खेलारी होवै, दुसमण
री नी खावै चोट।
गठोजोड वधियोडी ओपू,
निरखू गू घट ओट॥
रण वावल रो नाव पूजावै वी घर दीजे म्हारी माय,
जिण रो वम सूरवो होव वर परणाजे म्हारी माय।
लाखा रो सिरदार सूरवा,
भारत रो सिर मोड।
सहेल्या थुथकारो न्हाखै,
होव म्हारी जाड॥
वैरीडा नैं सबक सिखाव वी घर दीजे म्हारी माय,
जिण रो वस सूरवो होव वर परणाजे म्हारी माय॥
गज भर छाती चवडी जोयर,
लाखा लाजे छाट।
नखराळो होवै वीं वाघे,
गठजोडै र गाठ॥
मौनडली सू प्रीत न राख वी घर दीजे म्हारी माय,
जिण रो वस सूरवो होव वर परणाजे म्हारी माय।
सासा मे सूरापण होवै,
जलम भोम सू हेत।
तरवारा सू रगत बवा रण
गीली करदै रेत॥
पाण्ड शिव लिख धणो सरावै, वी घर दीजै म्हारी माय,
जिण रो वस सूरवा होवै वर परणाजे म्हारी माय।

गवरल

भ धारा रा गीत गू जरया गळी गळी,
चगा री घममाण घमोळ्या गळी गळी।

तीजणिया गिणगोर पूजरी गळी गळी,
नर मार्ग मन चायो प्रीता पळी पळी।
भ धारा रा गीत गू जरया गळी गळी, चगा री घमसाण।

घुडला घूम रया घम्मोळया गळी गळी,
घूमर घाले नणद भोजाया गळी गळी।
भ धारा रा गीत गू जरया गळी गळो, चगा री घमसाण।

गीना रो नग्णाट माचरयो गळी गळी,
सजियोडी सिणगार तीजण्या गळी गळी।
भै धोरा रा गीत गू जरया गळी गळी, चगा री घमसाण।

ठडी पून मगाडा देवै गळी गळी,
गोरथा रै मनडै री खिलरी कळी कळी।
भ धोरा रा गीत गू जरया गळी गळी, चगा री घमसाण।

रात दूधिया धार चानणी गळी गळी,
धोरा पर फोगा री फूट फळी फळी।
भै धोरा रा गोत गू जरया गळी गळी, चगा री घमसाण।

भाग तार्वडियो लारे छीया है गळी गळी,
धन्नो-प्राभै प्रीत युगा यू रळी रळी।
भै धोरा रा गीत गू जरया गळी गळी, चगा री घमसाण।

बिरखा राणी

तू आभ सूं उतरपरी धरती पर माड पड़ाव ए,
घूघरिया घमकावती अब बिरखा राणी आव ए।
धनस भांत रो ओढ ओढणो,
बणकर तू पणिहारी।
बूं बूं सूं पग पूज आगणं,
करां आरती थारी।।
गठजोड सूं सावण साग, थारो बरसां ब्याव ए,
घूघरिया घमकावती अब बिरखा राणी आव ए।
समदर में सूं घडियो भरभर,
खेता पर बरसासी।
भूख भागसी धान निपजसी,
थारा गुण सै गासी।।
बादळिया र रथ पर बैठ र, बरके आव बणाव ए,
घूघरिया घमकावती अब बिरखा राणी आव ए।
बाट जोवता आग्या थकगी,
क्यू नी दरसण देवै।
भूखा तिसडा जिनावरां री,
सुध बुध क्यू नी लेवै।।
घर घर माय बधाई बाटा, थाळया खूब बजाव ए,
घूघरिया घमकावती, अब बिरखा राणी आव ए।
बीजळ र पळकां सूं सगळा,
कोट–भुरज चमकाव।
रुप सुरगो देख र थारा,
चादडला मुळकावै।।
तनैं देव पाण्डे शिव र मनड में उठरया भाव ए,
घूघरिया घमकावती अब बिरखा राणी आव ए।

दायजौ

आछे घरा परणायी ओ बाबल, पढजो कागद जायी रो बाबल ।

पढा लिखा था पाळी पोसी,
म्हारै भाग लिख्योडो होसी ।
दोस दू मा नै काई ओ बाबल, आछे घरा परणायी ओ बाबल ।

भाई टीको मूं माग्यो दियो,
धूमधाम सूं ब्याव कियो ।
परण्य अजू नी पत्ळायो ओ बाबल आछे घरा परणाई ओ बाबल

वै नित सासू नणदल बाई,
सोनो दायजै मे कम लाई ।
परण्य री मागै पढाई ओ बाबल, आछे घरा परणायी ओ बाबल,

जिण दिन सूं म्हे पीवर छोडयो,
तातो खायो न रातो ओढ्यो ।
राय राय आरया सूजायी ओ बाबल, आछे घरा परणायी ओ बाबल,

कूवो सासरो पीवर खाई,
लिख भेजो की मे पडूं बाई ।
मागूं मौत न आई ओ बाबल, आछे घरा परणायी ओ बाबल,

अन्तरूणी घूणी ज्यूं धुकरी,
बोळा दिन बोली ना चुपरी ।
लोम्या सूं तग आई ओ बाबल, आछे घरा परणायी ओ बाबल,

बहू बेटी गाय है लोगा,
धुरी इणा रा हाय रे लोगा ।
पाण्डे शिव लिख नै बताई ओ बाबल, आछे घरा परणायी ओ बाबल ।

हिन्द रा लाल लाडला

था पर है अभिमान दस न देस रा थे हो सिर रा ताज
हिन्द रा लाल लाडला देस रा लाल लाडला
कासमीर हथनापुर बणग्यो कब पाकिस्तान
चीण बणायो है लदाख नैं कुरछेतर मदान
सजा सूरवा अब समतर सू दस री नींव बुलावैं रे
हिन्द रा लाल लाडला देस रा लाल लाडला
भारत मा न सीस झुकावा माटी तिलक लगावो
मातावा नू मान विदाई महाभारत सजावा
थारैं हाता कासमीर पर कुण चकर कै आवै रे
हिन्द रा लाल लाडला दस रा लाल लाडला
थे महाराणा अमरसिंघ सिवाजी प्रथ्वीराज
थे हो अर्जुन भीमसेन अर आजादी रा ताज
वाही वीरता देखाया थान इतिहासा म गावै रे
दिल्ली रा है मान था तणो हमाळ रा हो गीत
थे रण माही लडवा छाडकर मोतडल्या सू प्रीत
रण म मरकर वीर सूरमा सदा अमर पद पाव रे
हिन्द रा लाल लाडला दस रा लाल लाडला
पडी तिसाई आ वरगा सू कासमीर री धरती
चट्टाण बद सू करळाव देखो भूखा मरती
बद दुसमण रा सीस काटकर म्हारी भूख बुझावैं रे
हिन्द रा लाल लाडला देस रा लाल लाडला
धरती कर बखाण निरखती आभा गावै बधावो
थे लेकर के जलम दुबारा इण धरती पर आवो
चदण सी माटी रा उच्चा मस्तक तिलक लगाव र
हिन्द रा लाल लाडला देस रा लाल लाडला

टींटोडी रा अंडा
(महाभारत अनुवाद)

कांकरिया कूडाळ राख्या पाच अडा पाचू ही पाक्या,
टींटाडी क रखाळो ओ राम म्हारा ही वचिया पाळो राम ।

अठारा अक्षोणी सेना जूभैली,
कुरखेतर धरती धूजेली ।
जोधा साम्ही जोधा लडसी,
अणगिणती रा माथा भडसी ।।
लाई रा च्हसी चाळा ओ राम टींटोडी क रखाळो ओ राम,
कांकरिया कूडाळै राख्या पाच अडा पाचू ही पाक्या ।

चाणां री बौछाडा होसी,
छेती तरवारा मूं धोसी ।
आपो आपरी रिच्छया करसी,
म्हारा बच्चा बच ना, मरसी।।
होय सक जुध टाळो ओ राम, टींटोडी कै रुखाळो ओ राम,
कांकरिया कूटाळै राख्या पाच अडा पाचू ही पाक्या ।

अडा उपर उदारी भररी,
हाफी लाऊ भाऊ कररी ।
टळक टळक आसूडा वैव,
काळजियो कळप अर कंव ।
दूजो कोई ना चारो ओ राम, टींटोडी कै रखाळो ओ राम,

टेर सुणी प्रभु न्याय कर है,
वचन दियोडा न्याय करै है ।

हाथीं पर्सेवड़ै घटो टूटै,
अंडा डकीजै अेक न फूटै ।।
देखर हस्यो हेमाळो श्री राम, टींटोडी क रुखाळो गो राम,

अर्जुन न श्री किसन बतावै,
म्हारी माया कुण लख पावै ।
भगता नै मन सू ना विसरचा,
घटो उठायो बचिया निसरचा ।।

पाण्डै शिव कै तारो श्री राम, टींटोडी कै रुखाळो श्री राम,
काकरिया कूडाळै रारया, पाच अंडा पाचू ही पाक्या ।

गीत

भाग भुवाळी

देवै है जद भाग भुवाळी, उजळी रता लागै काळी
उजळी राता लागै काळी देवै है जद भाग भुवाळी

थावै तो करद चक्चूंधो
सूवो काम करावै ऊंधो
सीधै मारग सू भटकावै
भायो री आख्या खटकावै
मीठी बोली विष घुळवाद
मारग बगता राड करावद

ईं किणसू ही प्रीत न पाळी, देव है जद भाग भुवाळी
उजळी राता लागै काळी ईंरी बाता अजब निराळी

जुलमी जगण रोज करावै
थिरचक मनडो टिक नी पावै
चीत्योडा रै लागै चूची
नीद किनी सी उडज्या ऊची
तन रो कपडो बणज्या बैरी
दुख सिर तम्बू उणकर तणज्या

जुलमी री है जान कचाळी, देवै है जद भाग भुवाळी
उजळी राता लागै काळी ईरी वाता अजब निराळी

इण तरिया रा मारै थप्पड
सीधो करदै उतार अक्कड
घर री चीजा नै बिकवादै
माटी मे मूढो टिकवादै
दिन माया तारा दिखवादै
असलीपो ह्याथा लिखवादै

दुनिया सू बजवादै ताळी, देवै है जद भाग भुवाळी
उजळी राता लागै काळी, इरी बाता अजब निराळी

आखडल्या करवादै धोळी
इया जिन्दगी लागै मोळी
मिनख होयज्या हक्को-बक्को
कूवै मे दिरवादै धक्को
खरचे ऊ चच्चर घटवादै
भगा भगा जूत्या फडवादै

राजा हो वण जावै हाळी, देवै है जद भाग भुवाळी
उजळी राता लागै काळी, ईरी वाता अजब निराळी

दुसमण नैं ललकार

भारत रा मतवाळा सुणो, माता रो सुहाग बुलाव है,
रगत चाईज आज देस नैं कुण कुण नाव लिखाव है।
दसङतै री सींव बुलावै आज सनेसो आयो रे,
झूठा हक्क लगावै चीणी दुसमण बणकर छाया रे।
वीरी मत पर पत्थर पटक्यो सूत्या सेर जगाव है,
रगत चाईजै आज देस न कुण कुण नाव लिखावै है।।
सूत्या हो तो जल्दी जाग्या हथियारा सज आया रे,
हर हर महादेव कै बैरया री छाती चढ जावा रे।
सुरा सदेसो है देवा रो बापू देखण आवै है,
रगत चाईजै आज देस नैं कुण कुण नाव लिखाव है।।
भारत तो सूरां री धरती वीरा नै वर देव रे,
भारत माता पीठ खडी है दुसमण ताप न सेव रे।
वरीरा र माथै ऊपर याळ लडयो मडराव है,
रगत चाईजै आज देस न कुण कुण ना लिखावै है।।
सुणलो धरती रा बेटा भारत री रख्या करणी रे,
शास्त्रीजी री श्रेक धाक पर अब लडाई लडणी रे।
हैलो देयर दुसमण थांरी ताक्त न अजमाव है,
रगत चाईजै आज देस नैं कुण कुण नाव लिखावै है।।
आज देस री रख्या खातर निछरावळ में सीस धरो रे,
था सतिया रा दूध पियो है रगत बवादो मती डरा रे।
आज खोलकर दसो मारग वीर सुभाप बतावै है,
रगत चाईजै आज देस नैं कुण कुण नाव लिखावै है।।
वीर सिवा राणा प्रताव दुसमण री ताक्त तोडी रे,
पटल री नीती नैं देखर गोरी फौजा दाडी रे।
आज हिमाळो याद पुराणी थानैं खडो दिखावै है,
रगत चाईजै आज दस नैं कुण कुण नाव लिखाव है।।

मै लिछमी नै देखी

इण हली सू उण हेली मे घाघरियो घूमावता,
अर लिछमी नै देखी है दिन धोळै मिनख मरावता ।

आ मायावी माया वण वण,
रूप अनेकू धारै ।
श्री रामजी थका जाणता,
दौड्या ईरै लारै ।।

आभै देखी मिरगो वण सीता रो हरण करावता,
मैं लिछमी न देखी है दिन धोळ मिनख मरावता ।

वेमाता वण लेख लिखै,
घड-घड रामतिया तोडै ।
सौ कोसा अजळ करवायर,
आ गठजोडो जोडै ।।

मैं गरीव री बेटी देखी वूढै नै परणावता,
मैं लिछमी नै देखी है दिन धोळै मिनख मरावता ।

पहर परी रिसवत रो चोळो,
मिनखा मन पर छायरी ।
हर चुणाव मे आजादी पर,
आ बोली लगवाय री ।।

मैं जाळी बोटा सू पेट्या न देखी है भरवावता,
मैं लिछमी नै देखी है दिन धोळ मिनख मरावता ।

आख्या देखी साच बात नै,
आ झूठी करवाय री ।
धडो पापरो नित हाया सू,
टपक टपक भरवाय री ।।

शिव लिछमी नै देखी है गीता पर हाथ धरावतां,
मैं लिछमी नै देखी है दिन धोळै मिनख मरावता ।

फैमिली पिलान

मैं तो उफती उफनी उफनी, थारै घर धध सू उफती,
थानै हाथ जोड़ू मान बालम, थार टाबरिया सू उफनी।
मोभर प हो ऊभी हावू,
अर रात पड़ जद सोवू ।
दस बीला पीस पोउ आटा,
ता भस वर अरडाटा ।
कूवा खाड वर ली उफती, थारै टाबरिया सू उफनी,
अपरमा करवाला थार घर धवै सू उफतो ।
एक वै मयू नी ढूगा धोवै,
एक माच सूता रावै ।
तीजा रेन फाकरया नागो,
पाडोसए वेवै भागो ।।
सार जैर मरूली उफती, थार घर धध सू उफनी
थान हाथ जोड़ू मान बालम, मैं टाबरिया सू उफनी।
दो नीठो इसकूल जावै,
भाड रोज श्रोळमा लावै।
मास्टर आयर कैम्यो लेरै,
तू राम थारला घरै ।
कूण्या तक जाड्या हाथ अरै, थार टाबरिया सू उफनी,
मैं तो उफनी उफती उफती, थव घर धध सू उफती ।
अब तो जिएता चिएता थाकी,
र बाची काया पाकी ।
अ पाच पचीसा है जीता,
टावर अ घणा अणीता ।।
तन तिलाक देऊनी उफनी, थार घर धध सू उफती,
अब अपरसा करवाल थार टाबरिया सू उफती ।

छुपजा चदा

(मरद-लुगायी दोनू सागै)

गोरी —सुणो सजन मैं दोडी श्रायी थारो प्यार लुका कर लाई
मैं समझाऊ थानै
थे चदे नै समझायो नी लुक देखै श्रापानै ।

साजन—चदा बादळ मे लुक्जा, श्राख मीचलै तू छुपजा
गोरी श्राज मिन है म्हासू
म्हारी गोरी भोळी भाळी बा सरमावै थासू ।

साजन—किया क्वल सै पून्यु करसा ले हाथा मे हाथ
हम हस कर बाता करसा सोरी कटसी रात
जे मुडकर देखैलो तो मैं पलका माय लुगासू , म्हारी गोरी

गारी —श्रै दो नण लजावै ढोला साची बात न क्वै
मैं कहती कहती रुक जाऊ होठा तक श्रा रवै
छोडो क्ळायी लुक कर श्राई घरश्राळा सू छान, थे चदे

साजन—म्हारै मन दुखडा उपजै गोरी श्रे सुण बाना थारी
नी जाणू के जादू कीनो एक घडी न कटरी म्हारी
श्रब खोलण दे गू घट चदा जनम जनम गुण गासू , म्हारी गोरी

गोरी —मत रोको पिव वाचा देऊ, ढळती राता श्रासू
थे तेजो गाया श्रलगू जै पर हू नाच रिझासू
चांदडलो ढळ जावै मन री वात बना सू थानै, थे चदे

साच परमेसर है

मन मरजादा तोड़र मिनखाँ थे मत आपो राळो,
मिनख-मिनख सू प्रेम करो रे सब रो राम रुखाळो।
आ दया सी जूण सुलखणी,
क्यू थे लाजा मारो।
कर कर पाप धरा धिमकावो,
किम रसी पतियारा ।।
करणी काटो वणकर गडसी मिलै न काढण आळा,
मिनख-मिनख सू प्रेम करा रे सब रा राम रुखाळो।
जीवा अर जीवण दो सुख सू,
सावण दा अर खाम्रा।
आपस मे भाई-भाई मत,
पगा कुराडी वाम्रा ।।
चूंच देणिया चुग्गो देसी मन मत राखो काळो,
मिनख-मिनख सू प्रम करो रे सब रा राम रुखाळा।
आगण जड़ाँ मूळ सू काटर,
जस रो झंडो गाडो।
असली भगती मिनख मिनख र,
दुख मे आव आडा ।।
सत्य धरम री जोत जगा पग पग पर करो उजाळो,
मिनख-मिनख सू प्रेम करो रे सब रा राम रुखाळो।
नण नेह बरसा मूढ सू,
स नै इमरत पावो।
माडी आदत सूत साटका,
सीध मारग लावो ।।
पाण्डे शिव क रतो फरक ना दुख देजासी टाळा,
मिनख-मिनख सू प्रम करो रे सब रो राम रुखाळा।

कोई ओ भलो न कोई बो भलो

क जनता कैंरै पर भरोसो करा भाई रे ।
ईन पडा तो कूवो अर ईन है खाई रे ।।

पचास साल पूज्या समझ कर कै देवता ।
यै खाल योजनावा री रैया उधेडता ।।
आ गात भीता काना वारै आई रे ।
ईन पडा तो कूवो अर ईन है खाई रे ।।

सूरज रा साट वण परा टहूक्या मोरा सा ।
सपने रै माय जाणी ना लखण है गारा सा ।।
क कुरसी बैठ जात आपरी जताई रे ।
ईन पडा तो कूवो अर ईनै है खाई रे ।।

गाया रो घास कागदा रै माय चरयो है ।
किरसाना र पमीन नै बदनाम करयो है ।।
किण कैण कित्तो खायो अखबारा बताई रे ।
ईन पडा तो कूवो अर ई है खाई रे ।।

पढा लिखार छोरा रा चाचर घटा दिया ।
सै नोकरया रा बद रस्ता करा दिया ।।
बेरोजगारी देस मे इया बढाई रे ।
ईनै पडा तो कूवो अर ईन है खाई रे ।।

पताळा मे पुगादी भ्रष्टाचार री जडा ।
लालबहादुर मा देस मगत मत किया घडा ।।
मुरगा समझ गरीबा गळ छुरया चलाई रे ।
ईन पडा तो कूवो अर इन है खाई रे ।।

चांदडलो चढ आयो

चादडलो चढ आयो आभै, नयो सनेसो लायो रे
चादी रै रथ पर वैठायर, चादणी नै लायो रे
कूडो चमकै धरती हाथा
ली पूजा री थाळी है।
राम-स्याम रै तिलक करचा,
वा ईरी करी रखाळी है ।।
राम स्याम नै गोद रमाया अर दूधडलो पायो रे।
चादी रै रथ पर वैठायर चादणी न लायो रे।।
कितरा वेटा आन स्यान पर
न्योछावर जुग मोडचा
कितरा ई फासी पर चढ
इतिहास नयो फेरू जोडयो
आ वता सकै मायड पुदरत, कै कित्ता रगत वैवाया रे ।
चादडलो चढ आयो आभै, नयो सनेसो लाया रे ।।
कित्ती नारया आजादी र,
खातर लडी लडाई ।
रण माहीं तरवार चलायर,
रणभेरी बजवाई ।।
देस हीमना मरण्याया रा, दुसमण भी घवराया रे ।
चादी र रथ पर वैठायर, चादणी न लायो रे ।।
कित्तै भगतां भगती कर तप,
देखायो जीता जीना ।
जर वण्यो इमरत मीरा र,
हाथा म पीता पीता ।।
मायड भाषा म गीत गार, पाण्डे शिव मान वधाया रे ।
चादडला चढ आयो आभ, नयो सनसो लायो रे ।।

दोहा

लालच नाक कटवाय देवै ।
चढ़ै न दूजी नाक ।।
धाप्यो ना कोई धापसी ।
पाण्डे शिव मत चाख ।।

देख्यो बगत बेटा पर बाप ।
लगाय रैंया बोली ।।
किया मजैलो पढी गरीब ।
बेटचा री की डोली ।।

बेटचा गगा गोमती री ।
पाण्डे शिव बुरी हाय ।।
बारल बाधै गाय ज्यू ।
उण खूटै बध जाय ।।

अर लालच लाळ लगाय इसी ।
नीयत हिडकणी होय ।।
आ पाण्डे शिव साची कथै ।
दवा ना लागै कोय ।।

धरणी काटो वण गड ।
जिया बास री फास ।।
पाण्डे शिव मालिक ही काढै ।
आय उपरला सास ।।

तो धाप आवै किया गावता ।
सिर पर माटी थूक ।।
पाण्डे शिव सगळो जीमग्या ।
तोई गई न भूख ।।

पढाई मार्थ

आवो आवो भाया, आपा चाला रे पढण नैं,
इसकूला खालायी सरकार, आपा चाला रे पढण नैं।

पढ्या लिख्या सूं अक्कल आवैं,
काई सूं काई बण जावैं।
पढ्योडा नैं नौकरी दिरावैं सरकार, आपा चाला रे पढण नैं,

पइसो टक्को की नीं लागैं,
अैडो मोको हाथ न लागैं।
किताबां दिरावैं सगळा नैं सरकार, आपा चाला रे पढण नैं,

करैं नौकरी पटी लुगाया,
पढ लिखकर वै आगैं आया।
रुपिया ल्यावैं तीन हजार, आपा चाला रे पढण नैं,

बिना पढ्योडा रैया लारैं,
आपो आप नैं लाजा मारैं।
अैडो अवसर न आवैं बार बार, आपा चाला रे पढण नैं,

गाव गाव रा लोग जे पढसी,
म्हारा भारत आगैं बढसी।
चोखा होसी सगळा रा विचार, आपा चाला रे पढण नैं,

पढ्या लिख्या व्योपार कर सकैं,
सगळ घर रो काम सर सकैं।
कैरोई नी रैं मोहताज, आपा चाला रे पढण नैं।

लाज सरम नै खूटी टागी ।
मा बाप होयो टक्को ॥
मिनख वोई है मिनख पणै रो ।
मन मे राखै रक्खो ॥

श्रा देवासी जूण सुलखणी ।
हीरा सू अनमोल ॥
कवल-करघोडा भूल परो ।
तू मत कोडया सू तोल ॥

लालच लाम्बी जेवडी, ग्रर,
खीच्या श्राय न-ग्रत ।
जिण रै मन सतोष है,
पाण्डे शिव वो सत ॥

लालच र दरियाव मे ।
डूब रैयो है देस ॥
पाण्डे नाच करै श्रागण मे ।
. गू घट काढ कळेस ॥

घरमराज कण चीर द्रोपदी
रो मत ना खीचा ॥
मर्दा रै बाग माय विरा ।
पाण्डे शिव क्यू सीचो ॥

जिण दरसन री छीया कटग्या ।
काळा काटो मन रे ॥
दस पूछ रया पाण्डे शिव ।
माई पड़गी सन ? ॥

पला रावण एक हो ।
हुयग्या अबै अनेक ॥
पाण्डे शिव बण भिभीषण ।
डर मत रोटया सेक ॥

बगत हाथ सू निसरै, चेतो ।
आछी करणी करलो ॥
मिनखपणै री नाव बैठकर ।
भव सू पार उतरलो ॥

हा पार उतरसो पाण्डे शिव ।
मन वस कर राखोला ॥
माया रै हो वसीभूत ।
ये झूठ नही भाखोला ॥

देख बगत री खाता पाण्डे ।
शिव है हक्को वक्को ॥
मिनख मिनख नै दिन धोळ द ।
कूवै माही धक्को ॥

माया सू मोह राख कर ।
मिनख पणो मत भाड ॥
आछे आछे तेरू री भी ।
हुय जावै है राड ॥

धीरज रा फळ मीठा हावै ।
चाखणिया ही चाख ॥
पाण्डे शिव ललकार परो क ।
मालिक ईजत राखै ॥

रघुकुल रीत निभा पाण्डे शिव ।
नी वचना सू टळसू ।
चूलै चढण दे आग्या देखँ ।
था सू पैला वळसू ॥

दूजै रो हक जीम रयो मन ।
नाच माय भुक देख ॥
पाण्डे शिव ज्यू अणमख माहीं ।
रयो मूढो टक ॥

संतोष सवडणो है दोरो ।
सुख मोरो न झेलणो ॥
मिनखपणो महनव पाण्डे शिव ।
धार खाड खेलणो ॥

दाता देवण मे पाण्डे शिव ।
नहीं कमी की राखी ॥
लाज न आव जीवती वधू ।
गिट रैयो है माखी ॥

सुण्णी सुण्णी माय घणो है ।
जीमर देत आनद ॥
लालच कर पाण्डे शिव घालै ।
गळै फासी रो फद ॥

दुनिया रूग पण वैरावी ।
नहीं रामजी रूग ॥
मौत न आवै पाण्डे शिव तन ।
पडया गाट मे कुम ॥

निरमळ मन मायड रो पिगळर ।
वह गगा सो नीर ।।
पाप किया धोवै पाण्डे शिव ।
ग्रासीसा रघु वीर ।।

धीरज धरम सायवा दोनू ।
मत ना मेलो ताक ।।
सीच जाण दरखत पाण्डे शिव ।
क्यानी भरसी साख ।।

वाळघो वळ न मारघो मर ।
पाण्डे शिव कै मनडो ।।
किती बीनण्या परणीजग्यो ।
तन छाड परा मनडो ।।

न मिनखपणो रैयो मिनखा ।
किरतब जाणर विसरो ।।
हद ग्रनहद लीका पाण्डे शिव ।
तोड वार थै निसरो ।।

बदनामी रा ढोल घणा दिन ।
कद पाण्डे शिव बाजै ।।
फूक फूक पग धर धरती पर ।
मालिक ईजत साजै ।।

चोर एक चोरी कर रचो रे

थारी काया नगर रै माय चोर एक चोरी कर रचो रे,
थे चेतो करलो भाया ओ जोरा जोरी कर रचो रे।

असली धन तो दाय न आवै,
नकली धन नित जोडै।
चंचळ चतर चटोरो पल मे,
कोडा कोसा दोडै ।।

घाट चढाव मुळक परो किण सू ई न डर रचो रे,
थे चेतो करलो भाया ओ जोरा जोरी कर रचो रे।

आघी छोड सापती तावै,
सुख री सेजा सोवै।
विपदा पडिया कर कर ऊंचो,
फेर आगळया रोवै ।।

घडो पाप रो लालच कर, हाथा सू भर रचो रे,
थे चेतो करलो भाया ओ जोरा जोरी कर रचो रे।

राखै ना सतोप भटकनो,
रैवै च्यारू खानी।
आछो काम करण दे कोनी,
ऐडो है अभिमानी ।।

ग्यान अक्कल नै मिनखा री, दिन धोळै चर रचो रे,
थे चेतो करलो भाया ओ जोरा जोरी कर रचो रे।

धीरज रा फळ मीठा होवै,
किसमत आळो चाखै।
यान खोल सुणलो किण सू ई,
ओ यारी ना राखै ।।

अर वस मे कोनी होवै, नहीं मारया मू मर रचो रे,
थे चेतो करलो भाया ओ जोरा जोरी कर रचो रे।

अलख दुकान

अलख दुकान लगायर बैठयो, देखा नीं दरसावै रे
आप मतई घड रमतिया, घड घड पगा चलाव रे

नाव अनेकू गाव अनेकू
जोवण आळो के जोलै
बिना तावडी सूझ बूझरर
सै रो पाप–धरम तोलै

कहवे ना दरसाय भरम रो मन्न कोकरया वावै रे
आप मतई घडै रमतिया घड घड पगा चलाव रे

बो माथै पर लिख लकीरा
माडोडी लागै सूनी
वाचण आळो क सिर वाच
घणी लिखावट है जूनी

उथळ पुथळ कर नित नित करमा सारू खेल खिलावै रे
आप मतैई घड रमतिया, घड घड पगा चलावै रे

आभो अघर न दीस नाको
माया जावै ना पकडी
फू का सू फटकारर भीतर
स नै दै गोडा लकडी

अकल बाटल मारग वहता, कर कर कोप हिलावै रे
आप मतैई घडै रमतिया घड घड पगा चलावै रे

कुदरत रै हेलै रै सागै
होणी काम कर चटकै
खुद माथै ना लेवै फासो
फंदा न्हाख है फटकै

पाण्डे शिव कै बीकानेरी माया लखी न जाव रे
आप मतैई घड रमतिया घड घड पगा चलाव रे

जीवण रथ

तन दिवलो तो मनडो वाती सासा तेल जगे दिन राती,
पल रो नही भरोसो कद वुझ जावै रे ।
मीठो बोलर थयू नी नाव कमावै रे,
ई लाखीणे मिनख पणे नै,
मन ना लाजा मार तू ।
ओ लाखीणो मिल्यो मुसकला,
ऊंडी वात विचार तू ।।
जीवण रथ नै थयू नी सूल चलावै रे,
मीठो बोलर थयू नी नाव कमावै रे ।
चम चम क मूढै मायँ,
मोती आळो पाणी है ।
जीवण काद री नइया जे,
भवमू पार लगाणी है ।।
नही भरोसो आ कद डूब जावै रे,
मीठो बोलर थयू नी नाव कमावै रे ।
फूक फूक पग नही धरलो,
अर जे खोटा घडसी ।
पाप करोडा छोडै कोनी,
विच्छू दायी लडसी ।।
कचन सी काया थयू काट लगाव रे,
मीठो बोलर थयू नी नाव कमाव रे ।
पाण्डे शिव तू समझ मन मे,
कोई न सग सगायी ।
नही भरोसो कद मोतडली,
आ धड जावे छाती ।।
जीवण रथ पर थयू नी धरम धजा फरकावै रे,
मीठो बोलर थयू नी नाव कमावै रे ।

परखै परखण आळो

मत्र न देवै अेक निजर सू परख परखण आळो,
चाए नानक ईसा अल्ला, चक्र सुदरशन आळो ।

सगळा री जामण है धरती,
सै रो अेक धरम ।
मनी लड़ो रे भेद भाव रो,
झूठो अेक भरम ।।
सगळा री मायट है गगा प्रीत सानरी पाळो,
चाए नानक अल्ला ईसा चक्र सुदरशन आळो ।

सागण माटी सू घड़ियोड़ा,
काया री के जात ।
वेमाता घड पगा चलाव,
ताडै हाथू हाथ ।।
ग्यान देवती भाषा कवै मन मत राखो काळो,
चाए नानक अल्ला ईसा चक्र सुदरशन आळा ।

चाद'र सूरज तारा रैव,
आभ अेक तळै ।
अणगिणनी री नदिया बैकर,
समदर माय रळ ।।
दाता देख रया है थान मत ना पाप उछाळा,
चाए नानक अल्ला ईसा चक्र सुदरशन आळा ।

अेक रुग री साखा सगळा,
अेक नाग रा फूल ।
न्यारी न्यारी जात बणायर,
क्यू कररया हो भूल ।।
पाण्डे शिव कै भेद भावना, काढ मना सू वाळो
चाए नानक अल्ला ईसा चक्र सुदरशन आळा ।

श्रा हालत देखी जद मेजर,
बोल्या भठ रीस रिमाकर कै।
रजपूती लाजा क्यू मारो,
थे म्हारै लार श्राकर क।।

ताते तोऐ सी होय लाल,
कर हीमत श्राप खडी होयी।
मत बोल तीर सा थे मारो,
वा रै नैरा साम्ही जोयी।।

छत्राणी हू रजथाणी हू,
म्हारी भी जात लडाकी है।
भारत री देखो श्रान स्यान,
लड झासी राणी राखी है।।

श्रगोठो वाढ्यो छुरियै सू,
माथै पर रातो तिलक करयो।
थे हुवो विदा पतिदेव श्राज,
कै चरणा मे वी सीस धरयो।।

श्रागणे माय नै पग धरियो,
देख'र मायड साम्हा श्राया।
सिर पर धर हाथ कयो मायड,
मत रण मे कायरता लाया।।

रजपूता नै धरती वर दै,
रण माही लडता श्राया है।
श्रो म्हारो कहणो है सपूत,
भारत ताई म्हे जाया है

जद सुणी वात मेजर बोल्या,
जीत्यो तो, जीतो आऊलो।
रजपूती रगत सेस रैता,
नी मा रो दूध लजाऊलो।।

आ कै'यर हो'यर विदा आप,
काक्ड लदाख पर आ जावै।
बन्दूक माय गोळ्या भरकर,
रणखेता माय उतर जावै।।

बा झडी लगादी गोळ्या री,
चीणी ना बासू बच पाया।
बै हिन्द देस रा रखवाळा,
छेकड मे जाय काम आया।।

चमचा चाळीसो

रामायण मे वो सार नही,
जो चमचे चाळीस माया ।
देवा मे वै गुण नी लाधै,
लाधला चमचा रै माया ।।

देवा विषणू नै जाय क्यो,
म्हान कोई ध्यावै कोनी ।
श्र चमचा देव नया प्रगटघा,
म्हारै कान्नू आव कोनी ।।

हथकडा श्रारा नया नया,
म्हान तो कर दीना ढीला ।
थारै भी दसण लायक है,
श्रा चमचा री राफड लीला।।

थे राको श्रारी माया न,
फल्या काद् नइ श्रावैला ।
थाड साला म थाराडा,
सिघासण श्राय हिलावला ।।

विषणू लिछमी सू पूछै है,
श्र कुणसा देव नया जाग्या ।
वा बोली नकट देवा सू,
नर नारी नावा तक श्राग्या ।।

विन धूप दीप खेया रीझै,
रिसवत खाणै मे नामी है ।
धरती पर चमचा खुद नै ही,
समझै बस अन्तरजामी है ।।

सोगन नै समझै ग्रै सीरो,
मरणै तक सू ना डररया है ।
देखू हर ग्रेक महक्मैं मे,
चमचा ही सासन कररया है।।

रसगुल्ला रबडी परसादी,
धरदो तो ग्राख तुरत खोनै ।
जद भगत विचारो हाथ जोड,
श्री चमचै जी री जै बोलै ।।

थे महाराज सिध करो काम,
हू गुण थारा नित गाऊलो ।
म्हारो सिध होया काम काल,
थो नगदी ग्रौर चढाऊलो ।।

नगदी गुण चमचा देव रीझ,
ग्रर भोग लगाव ह फटकै ।
रे काया तिरपत नी होयी,
ला चाय पान फेरू चटकै ।।

ग्रोडा रै ऊपर नीसरग्या,
ग्रारो कोई ना है लेखो ।
चमचै देवा रा हथकडा,
धरती पर ध्यान लगा देखो ।।

विपणू धरती पर ध्यार लगा,
चमचां न देखण लाग्या ह ।

चमचा रो देखर चमत्कार,
साची बू गुद घबराग्या है ।।

मन ही मन सोचें श्रे चमचा
तो तीन लोक मे छावेला ।
घरती श्राभो के चद्रलोक,
सगळो श्रमाड हिलावला ।।

गिणती कर बोल्या सुण लिछमी,
भारत मे चमचा श्राधा है ।
तू ध्यान लगायर सूल देख,
चमाचा सू चमच्या जादा है।।

चमचा सू चमच्या है तकडी,
फैसन मे श्राग पडरी है ।
लिछमी बोली ह प्रीतमजी,
वेमाता जादा घडरी है ।।

विषणू कैवै वेमाता नै,
रत्ती जादा क्यू घडरी है ।
इ जनसख्या रै कारण हो,
दुनिया श्राफत म पडरी है ।।

इत्त मे श्रा नारद बोल्या,
था दोना गिणिया है श्राधा ।
भारत मे चमचा चमची सू,
है कुडछा देव घणा जादा ।।

कुडछा रा नाव सुण्यो विषणू,
बोल्या श्रो कोई रोळो है ।
पाण्ड शिव त्रोल्यो महाराज,
नक्ली दवा रो टोळा है ।।

भाग री

कैंयो मायला भाग छाणो,
गोठ मे आनद आसी ।
मै बोल्यो इतरी मत घोटो,
घणो नसो चढ आसी ।।

स बोल्या मतना घबराश्रा,
मूड बणासी आ भारी ।
मैं कैयो कैणो माना रे,
आपा मे होवैली खारी ।।

बोल्या मस्ती सू जीमाला,
घणा नसा नइ आवैला ।
मैं कैयो इतरी पीणे सू,
लोग घरा पूचावला ।।

म्हारी कुण मानै हा, छाणी,
पीर पार निमटवानै चाल्या ।
चावडता जद लोटा माज्या,
बूटी आयर घेरा घाल्या ।।

रग-रग मे सग्गाटा उपडै,
आम्या मे लाली छागी ।
इतै मे ये मत पूछया बू,
धरती धूमण न लागी ।।

एक बोल्यो भूकम्प आसी,
देखो धरती धूजै है ।

चमचा री देखर चमत्कार,
साची कू खुद घबराग्या है ।।

मन ही मन सोचै श्र चमचा
तो तीन लोक मे छावैला ।
धरती आभो के चन्द्रलोक,
सगळो ब्रमाड हिलावैला ।।

गिणती कर बोल्या सुण लिछमी,
भारत मे चमचा आधा है ।
तू ध्यान लगायर सूल देख,
चमाचा सू चमच्या जादा है।।

चमचा सू चमच्या है तकडी,
फैसन मे आगै पडरी है ।
लिछमी बोली हे प्रीतमजी,
वेमाता जादा घडरी है ।।

विपणू कैवै वेमाता नै,
इत्ती जादा क्यू घडरी है ।
इ जनसख्या रै कारण ही,
दुनिया आफत मे पडरी है ।।

इतै म आ नारद बोल्या,
था दोना गिणिया है आधा ।
भारत मे चमचा चमची सू,
है कुडछा देव घणा जादा ।।

कुडछा रा नाव सुण्यो विपणू,
बोल्या ओ कोई रोळो है ।
पाण्डे शिव बोल्यो महाराज,
नक्ली दवा रो टाळो है ।।

मैं मेघ–मलार गावतो हो,
लोग उठा घेरैं लाया ।
ग्राडोसी – पाडोसी पूछै,
के ग्रामे भैंरू ग्राया ।।

घैर ग्रा कं घरग्राळी न,
नीचै ग्रा रोटी घालो ।
वा वँ छोरं नै जोवो दू,
मतै लेयक्र के खालो ।।

छीकै माथै सू रोटया ली,
कढी पडी चूल लारै ।
पोतो दे घोळी री हाटी,
घरियोडी ही बी सारै ।।

चौकै र माय ग्रधेरो हो,
भाईजी ली झट थाळी ।
घोळी ऊघाली कढी जाण,
दोनू हाडचा ही काळी ।।

दस वीस सवडका मारचा का,
ग्राई किर–किर दाडा नीच ।
भाईजी रीसा बळिया तो,
भाभीजी ग्राया झट नीचै ।।

वं देख परा भाछा फूटचा,
के भाग पीर ग्रारचा हा ।
घाळी मे रोटी चूरी था
सूझै कोनी खारचा हो ।।

पाण्डे शिव बोल्यो नमे माय,
सुण साची वात वताऊ ।
बूटी वाजा रँ सागै ग्रव,
नी गोठ माय न जाऊ ।।

मैं कँयो कँ नसो आयग्यो,
दिन म कमती सूझ है ।।

वो बोल्यो कमती नी सूझै,
दिन म दीसै है तारा ।
म्हनै सुणीजै इन्द्रलोक मे,
देव लगा रया है नारा ।।

दूजो ठठी काढर कँरचो,
हा सुणिजै तो है रोळा ।
जळदी घेरै चालो नइ तो,
आभै सू पडसी गोळा ।।

तीजो लगा समाधी बोल्यो,
घोरा उठ रया है धूडो ।
तीन तिलोकी दीसै मनै,
साच कवू हू, ना कूडो ।।

सन कर कुंभार निसर तो,
कै म्हारा गधा गम्या देख ।
तन्नै तीन तिलोकी दिखरी,
कठै चरै है जल्दी देख ।।

एक नसे मे उठर अचानक,
बम भोळा क, नाचण लाग्यो।
कुंभार देख्यो भूत भ्रम,
जूत्या छोड परो भाग्यो ।।

गरम कचोळी रबडी भुजिया,
इया धरया रह जावै ।
दाणे दाणे पर नाव लिख्यो,
तो कुतिया गोठ मनावै ।।

जरदै री

दादोजी जद जरदो खावै तो,
चालै चौगड़दै फवारा ।
थूकण रो ठाठ निराळो है,
चाली होळी रा पिचकारा ।।

जरदे न जरदो मत कैवो,
लिछमण-सरजीवण बू टी है ।
म्हारा नानोजी कवै कै,
जरदो जलमा री घूटी है ।।

इणनै खावणियो मरद वजे,
अतर ज्यू खसबू दै मूढो ।
घरआळी कैवै पती देव,
क्यू थूक थूक भररया ढूढो ।।

पिचकारया छोडो पचर पचर,
जरदो खावण रो ढग नही ।
भींतां सू होळी खेलो हो,
घोऊ तो उतरै रग नही ।।

मैं पीर–देवरा घ्या धापी,
रुपियो ओसीचर घर दीनो ।
था जरदो छोडयो नइ म्हारै
नाका माया दम करदीनो ।।

छोटा बोल्या क्यू लडरया हो,
के माय लडाई धरियो है।
बारू कैवै क ओ देखा,
सगळा आग सिर करियो है।।

जे थेरा मूड खराब हो,
तो पहला मन बताणो हो।
माथ मे सडक काढ दीनी,
रे मनै सासरै जाणो हो।।

फेर लागी सरदार जी रै,
बीबी सू लड दफ्तर आव।
जरूरी फायला तुरत फुरत,
चपडासी साथै मॅंगवाव।।

जिण ऊपर लाल्ड लिखणो हो,
वाळो सू लिख लिख धररया है।
वाळी री जगा लाल सू लिख,
मैं फायला न्हे करया है।।

मनलो बारू समझावै ता,
तुम्मी चुप रवो क अक्डै।
वो फायल उठार देखावै ता,
गळनी मानर माथो पकड।।

दाढी नै बुचरता कैयरया
हागया राम रही प्यारा।
पाण्ड लिख क्य दास नहीं,
धडिया म बजरी है वारा।।

कै पती देव तू गूंगी है,
ओ थारी ग्रास्या खटक्यो है ।।
म्हारै काके खार-कुस्ती म,
लड किण काग नं पटक्यो है ।।

ओ सलाजीत रो काम करै,
किण सू ही वात न छानी है ।
भाई सायर चैलेज दियो,
दारासिंघ हार इ मानी है ।।

सुस्ती नैं ताड लक्डी जू,
ईंखातर इणनैं फाकू हू ।
क्द कुस्ती लडणी पड जाय,
मैं साथ भूगळी राखू हू ।।

क घरम्राळी कैणो मानो,
क्यू सिर सू लाज सरम हाखो ।
ओ जरदो है या चूरण है,
भर भरर हथेळया हो फाको ।।

क पती देव दादोजी तो,
मड्रण म मणभर खाव है ।
जद थापी द हत्याळो पर
खनलो छीका सू छिक जाव ।।

जरदे म जोस घणे रा ह,
कोई वाथेडो कर लवो ।
लडण सू पहला लगा होठ,
दाता र विच मे धरनेवा ।।

चूनो मानरण रो घर माम,
दादोजी नह जांतो याजी ।
मायो फुड़वायो माय थूव,
था वात भाज री है ताजो ॥

मैं उद हकीमा नै पूछ्यो,
वां ईरी करी बडायी है ।
पित वात, कफ दस्ता री यग,
जरदो ही ग्रेक दवायी है ॥

ही ग्रेक भायलै न मयजी,
वी दवा जाण कर म्हायो है ।
तो भूठ घोनणो महापाप,
म्हाता ई चक्कर भायो है ॥

कवजी तो टूटी ना टूटी,
पण जरदे रग दिखायो है ।
जद दियो घिरोळा पेट माय,
खायोड़ी वारे भायो है ॥

घरती पर खाय तळाछ पड्यो,
आख्या री पुतळया ही फिरगी।
तो लोगा क्यो उठावो रे,
वायू नै भाय गई मिरगी ॥

तो ग्रेक क्यो भावे हिचकी,
दूजो बोल्यो भायो चक्कर ।
जे होस कराणो है थांन,
भट घोळ र पावो नी सक्कर ॥

तीजो बोल्यो माथो छिड़को,
ग्रैनै तो होय गयोड़ो है ।

आपा रै नाव लिखीजै लो,
जळदी ऊ अ़सपताळ भेजो ।।

बाबू सोच्यो मन अब मरसा,
उठ नइ तो सक्कर पावैला ।
घरआळो काईं सोचैली,
जे अस्पताळ ले जावला ।।

झट सू ऊभो होकर बोल्यो,
मत म्हनै अस्पताळ भेजो ।
लो साची बात बताऊ हू,
मनै नइ होयो है हैजो ।।

आ जरदै री है करामात,
रोटी खायोडी सा धिरगी ।
मैं दवा जाण के खायलियो,
मन नइ आयी है मिरगी ।।

जे म्हारो कैणो मानो तो,
मत कोई जरदो खाया रे ।
मिरगी अर हैजो होवैलो,
मत कोई गळ लगाया रे ।।

जरदो खावणिया सू मानो,
स पनवाडी घबरावै है ।
अळगै सू देख परा कैवै,
औ मुफ्तन-दजी आवै है ।।

जरद मे बात बिटामिण है,
ओ शिव पाण्डे रो कणो है ।
ये माग मान खाओ बसक,
मागण मे कोइ न मैणो है ।।

गजा री

कुण कवै है कै वेमाता,
गजा में रूप भरै कोनी।
वा सुन्दर लडकी टाट देख,
लडकै सू ब्याव करै कोनी।।

आ वेमाता री गळती है,
गजा नै केस दिया कोनी।
पण गजा री भी गळती है,
वा माग परार लिया कोनी।।

गजा शवर नै लिख भेजी,
धरती पर थोडो भार देख।
वेमाता री नादरसाही,
नारी नी गजो घडी अेक।।

समझावो रिसवत लेर केस,
नार्यां नै देतो जावै है।
मरदा सागै अन्याय इता,
चा गजा ही भिजवावै है।।

माना कै हिटलर हस्तो हो,
सगळी दुनिया न हिला सक्यो।
पण टेल टाट मे लगा केस,
फूला सा कोनी खिला सक्यो।।

गजा नैं गजा क्हदो तो,
बाबा ऊंची कर भिड जावैं।
तो मारग वते लोगा न,
छोडाणै री नोवत आवे।।

हा तालवोट जी क्य भला,
थे सिर पर हाथ फेर लेवो।
नाराज न होवै टाटा नैं,
थे ननीताल मती क्वो।।

मुखमल सू कोमल वता परा,
हसकर वळिहारी जाय सका।
फेर टाट ऊपर ताल ठोक,
फिलमी गाणो भी गाय सका।।

तवल री धाधा सुणता ई,
झट श्रीमानजी मुसकाव।
जाणै कै मालिस होरी है,
इणतरिया रो आनँद आवे।।

तो माखण मसळ्या पछ टाट,
सामी ना कोई जोय सकै।
सूरज सू जादा चमक दमक,
आधा-सीसी भी होय सकै।।

केई टाटा तो कू साक्षात,
वस गोळ मतीरै सी लागै।
अर केयी आतम जिसी लांवी,
दस्या सू भूख परी भाग।।

टूटे घूटे नी वरगा तक,
नोगसियो मावण री वट्टी।
दूरै सू लाग टाट इया,
है जाज उतरणै री पट्टी।।

गरमी रै माहो इत्ती गरम,
रैवै मजमायर देग सरा।
नी पड़ै जरूरत तोए री,
रोटी ऊपर धर सेक सको।।

घर गरजी री मजव टाट
रो वरणन होय मध नायी।
गरमी मे रहनी ठंडी हो,
वरफ री सिल्ली रै दायी।।

ये वेमाता नै बुरो पवो,
आ नहीं समझ मे आव है।
वी गाधी जी री घडी टाट,
पर दुनिया फूल चढाउ है।।

दो होड भायला म लागी
है विश्व माय गजा जाग्गा।
तो दूजो वोल्यो सफा भूठ
गजा दुनिया म है ग्राधा।।

वा वो नी सी न लिग्य भेजी,
गिणती री तुरत उपाय करो।
गजा जादा-वेसा ग्राळा,
वता बराबर न्याय करो।।

वो उदघोसक भी हो गंजो,
पढताई चक्कर मे पडग्यो ।
अर मनेजर भी गजो हो,
सुणतांही विच्छू सो लडग्यो ।।

पाण्डे शिव बोल्यो मानो रे,
बेमाता बीसू हारी है ।
पण केसा खातर गजा रो,
ओज्यू अन्दोलन जारी है ।।

आख्या रो तारो कसमीर

भारत हेमाळो अग अेक म्हारो कसमीर है,
साची पूछो तो आख्या रो तारो कसमीर है ।
जुगा जुगा सू ओ कैवावै,
अमर नाथ री नगरी ।
फुटरापै मे कोई न इणरी,
होड कर सकै पग री ।।
सिव लिंगी रा दरसण मुगती रो द्वारो कसमीर है,
साची पूछो तो आख्या रो तारो कसमीर है ।
काई कुरदत रूप जडयो है,
मत पूछो थै वाता ।
सोनै री चिडकोली वाजै,
मुगट धरचो सिर हाथा ।।
देख्या मन मोहलै कामणगारो कसमीर है,
साची पूछो तो आख्या रो तारो कसमीर है ।
पाडा अर घाटचा नै कोई,
लाघ सक्यो नी भाई ।
इण पर धाक लगावणियै,
रण में मूढ री खाई ।।
अर म्हारोडै मनमूवा रो धारो कसमीर है,
साची पूछो तो आख्या रो तारो कसमीर है ।
अटळ सिगासण कै थे भूलर,
दो न मोत न न्तो ।
आतक्वादी भेज अठी न,
करस्या काम अणूतो ।।
सुण लेवो सगळै धरमा रो नारो कसमीर है,
साची पूछो तो आख्या रो तारो कसमीर है ।

देस-भगती

देस भक्ति परमाण देयनं नाव कराला,
फौलादी हाथा हिन्द नं वळवान कराला ।

धर जान हथेळचा रुखावाळा अरी सीव नं,
अणगिणती जोधां माथा भेट करचा नीव नं ।
धजा निरी तळे ऊभ अमर गुण गान कराला,
देस भक्ति रा परमाण दयन नाव कराला ।।

आकाश किणरी है आख उठावै इय पर,
रगता सू जगतै वळिदान्या र दिवल पर ।
पड्या वगत वेधडक निछावर जान कराला,
देस भक्ति परमाण दयन नाव कराला ।।

भारत मा र नैणा रा ऊगता सूरज,
मेला माथै वीर मात री सदा चरण-रज ।
भ्रष्टाचार-कलंक काट मा दुख हराला,
देस भक्ति परमाण दयन नाव कराला ।।

मरजादा रा मुगट पर इण रा मुत सा'ती दूत है
लाज दूध री राखै व मिनरणी सपूत है ।
हद म पग मेलणिय न पगहीण कराला,
दस भक्ति परमाण देयन नाव कराला ।।

वीर सावरकर री याद

माथ खाफण बाघ बिनायक करदी सरू लडाई,
घूम मचाती सावरकर री कुरबानी रग लाई ।

भारत न आजाद करासू,
निसरी मुख सू बाणी ।
ऊमर कद सुणा अगरेजा,
भेज्यो काळ पाणी ।।

मरणो मगळ मान क्रांति री इकलग अलख जगाई,
घूम मचाती सावरकर री कुरबानी रग लाई ।

काळ कोटडी कील नखा सू,
लेख लिखोडा बोलै ।
माख भरता सावरकर री,
भीता मूढा खोलै ।।

जिंदगाणी नै जलममोम हित झुर-झुर सदा चढाई,
घूम मचाती सावरकर री कुरबानी रग लाई ।

नारो दे कहतो-अर जुलम्या,
हिंद छोडणो पडसी ।
जलम लेय श्रोडू सावरकर,
थासू रण मे लडसी ।।

दड दियोडा झेल मुळरता देस भक्ति दरसाई,
घूम मचाती सावरकर री कुरबानी रग लाई ।

पोरदारा सू बच वीरो,
समदर माही कूदयो ।
जान चढा जामण-चरणा मे,
सूरज बण वो ऊग्यो ।।

देस दिवान री महिमा शिव पाण्डे लिखी न जाई,
घूम मचाती सावरकर री कुरबानी रग लाई ।

साच ही भगवान है

घोयर काया निरमळ कर ल, करधा कटै सै फद,
सच सू ऊंचो है सत सग, मत सू ऊंची है मत सग।

अग्यानी न ग्यान दान दै जीवण सुळझा वणा महान द,
ज्यू कै लासू सोनो वणज्या पारस लाग्या अग।
घोयर काया निरमळ कर लै करघा कट स फद।

दै सुबुद्धि जप नै तू माळा कर दै घट अघर उजाळा,
आमीसा रो वचन पैर कै जीत क्रोध सू जग।
घोयर काया निरमळ कर ल करघा कट सै फद।

प्राण हथेळी रखवा दवै जर हळाहळ चखवा देवै,
साच राम अर वचना सू माळा वणै भुजग।
घोयर काया निरमळ कर लै करधा कट सै फद।

निरघन नै देवै तप बळ धन आनन्द सू महका देवै मन,
छोया वठ परा जीवण रो असली सीखा ढग।
घोयर काया निरमळ कर लै करघा कट स फद।

वचन जाय नी खाली अरा, लागोडा माया रा पहरा,
वण दातार भींच मत मुट्ठी भगती लासी रग।
घोयर काया निरमळ कर ल करघा कट स फद।

धीरज चोळो धारण रावै जिरला ही ईरा फळ चाख,
पाण्डे शिव जुगती सू मुगती गळी प्रेम री तग।
घोयर काया निरमळ कर लै करघा कटै स फद।